॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

सितम्बर 2018 वर्ष 21, अंक 9
विक्रमी सम्वत् 2075
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

योगेश्वर श्रीकृष्ण

❒ महात्मा चैतन्यस्वामी

संसार के इतिहास में अनेकों ही महापुरुष हुए हैं मगर योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसा बहुआयामी व्यक्तित्व कहीं भी दिखाई नहीं देता है। यही कारण है कि श्रीकृष्ण जी न केवल भारतवर्ष में बल्कि समूचे विश्व में पूजनीय व आदरणीय हैं। वे आप्त पुरुष थे, जनक्रान्ति के अग्रदूत थे, परमात्मा के अनन्य भक्त तथा महान् योगी थे, निर्भीक थे, त्यागी और तपस्वी थे, उनका व्यक्तित्व शालीनता से परिपूर्ण था, मैत्री भाव उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था, वे अदभुत् नीतिवान, सदाचारी, निर्लोभी, नैतिकता से ओत-प्रोत तथा बलवान-योद्धा एवं युगपुरूष थे। महाभारत युद्ध को रोकने का उन्होंने भरसक प्रयास किया मगर दुर्योधन की कुटिलता व हठध र्मिता के कारण वे उसमें सफल नहीं हो सके। जब युद्ध अनिवार्य हो गया तो धर्म की विजय तथा अधर्मियों का नाश करने के लिए वे कटिबध हो गए। युद्ध की पूरी तैयारियां हो गई तथा जब दोनों सेनाएं कुरूक्षेत्र के मैदान में आमने-सामने खड़ी हो गई तो उनके सामने एक बहुत ही विकट स्थिति आ उपस्थित हुई। पाण्डव पक्ष का अतुलनीय वीर अर्जुन मोहग्रस्त होकर युद्ध से ही उपराम हो गया। अर्जुन श्रीकृष्ण जी को तर्क देता है कि वह इन अपनों की हत्या नहीं करेगा, उसे भीख मांगकर निर्वाह करना स्वीकार्य है, यदि उस शस्त्ररहित को कौरव पक्ष वाले मार भी दें तो भी वह प्रतिकार नहीं करेगा, हे केशव! युद्ध के लिए तत्पर इन अपने ही बन्धु-बान्धवों को देखकर मेरा मुंह सूख रहा है, मै पसीना-पसीना हो रहा हूं, मेरे हाथ से गाण्डीव छूट रहा है.... ऐसा कहकर अर्जुन अपने गाण्डीव को एक ओर रख कर रथ के पिछले भाग में जाकर बैठ जाता है। अर्जुन उस युद्ध की एक बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण कड़ी था, उसकी ऐसा अवस्था देखकर महाभारत युद्ध के सूत्रधार श्रीकृष्ण महाराज जी की अपनी स्थिति कैसी रही होगी इसकी कल्पना करना कठिन नही है। ऐसी विकट परिस्थिति में भी योगीराज विचलित नहीं हुए तथा अर्जुन को गीता के रूप में ऐसा अद्भुत उपदेश दिया कि अर्जुन मोहरहित होकर युद्ध के लिए कटबध हो गया। गीता का यह ज्ञान आज भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विमोहित व्यक्ति का संजीवनी बनकर अपना कार्य कर रहा है। गीता का निष्काम कर्म वास्तव में ही एक अद्भुत तकनीक है जिसके कार्यन्वयन से व्यक्ति अपने इहलोक तथा परलोक को सहजता से संवार सकता है।

श्रीकृष्ण जी महाराजा यायाति के कुल में पैदा हुए थे। महाराज यायाति जी के पूर्वज राजाओं के कुछ नाम इस प्रकार मिलते हैं-अग्नि का पुत्र चन्द्र, चन्द्र का पुत्र बुध, बुध का पुत्र इला, इला का पुत्र पुरूनवा, पुरूनवा का पुत्र आयु, आयु का पुत्र नहुष और नहुष के पुत्र का नाम ही यायाति था। महाराजा ययाति की दो रानियां थीं-शर्मिष्ठा और देवयानी। शर्मिष्ठा से द्रुह्म, अनु और पुरू का नाम की यायाति था। महाराजा ययाति की दो रानियां थी-शर्मिष्ठा और देवयानी। शर्मिष्ठा से द्रुहा, अनु और पुरु नाम के तीन पुत्र तथा देवयानी के यदु और तुर्वथु नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। देवयानी के पुत्र यदु के कुल में ही आगे चलकर श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ इसलिए वे यदुवंशी थे। इनके पिता जी का नाम वसुदेव तथा माता का नाम देवकी था। (शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आध्यात्मिक क्रियात्मकता ने बदली डी.ए.वी. की दशा और दिशा

❒ एस.के. शर्मा

डी.ए.वी. आंदोलन अपनी यात्रा के 132 वर्ष पूरे कर चुका है। ये बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है कि आरम्भ से ही इस आंदोलन की बागडोर शिक्षा-शास्त्रियों, न्यायाधीशों, वकीलों, शासकों, लेखकों और पत्रकारों के हाथों में रही जिन्होंने अपनी श्रद्धा और समर्पण से इसमें सक्रिय योगदान दिया है। इस लम्बी अवधि की एक यह भी विशेषता रही कि जब-जब, जैसी-जैसी परिस्थितियाँ हुईं, तब-तब वैसे ही मार्गदर्शक इसका नेतृत्व संभालते रहे। जब डी.ए.वी. का शैशव था तो आवश्यकता थी दूरदर्शी, विवेकी जानकार महापुरुषों की, जो इस संगठन के उद्देश्यों का निश्चय करते, एक संविधान का निर्माण करते–जिसके दायरे में रहकर इसके विकास को आधार मिलता।

ऋषि दयानन्द जब पंजाब आए तो इस प्रदेश की समस्त गतिविधियों का केन्द्र लाहौर (अब पाकिस्तान में) था जहाँ का शिक्षित वर्ग उनके विचारों से प्रभावित हुआ। यही वर्ग आगे चलकर आर्य समाज की स्थापना और इसके प्रचार-प्रसार में जुड़ गया। इस दौरान अनेकों विधिवेत्ता, न्यायाधीश, स्वामीजी के संपर्क में आए और उनसे प्रभावित हुए। आर्य समाज की दृढ़ नींव पर एक शिक्षा-मंदिर की स्थापना इन्हीं महापुरुषों द्वारा हुई। ये कहना भी गलत न होगा कि आंदोलन के आरम्भिक 26 वर्षों तक डी.ए.वी. का नेतृत्व इसी श्रेणी के हाथों में रहा जो कानूनदाँ तथा न्यायाधीश तो थे ही, साथ ही सच्चे आर्यसमाजी भी थे।

समय बदला, आर्य समाज और डी.ए.वी. संस्थाओं से जुड़े हुए, तप और त्याग के गुणों से परिपूर्ण अध्यापकों और प्राचार्यों के हाथों में इस आंदोलन का नेतृत्व सौंपा गया। इस अवधि में डी.ए.वी. की शैक्षिक गतिविधियों को नये आयाम मिले। संस्थाओं की संख्या बढ़ती चली गयी और श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा के समय तक ये संख्या लगभग 600 तक पहुंच गई। इनमें अधिकतर वे लोग थे जिनकी शिक्षा डी.ए.वी. संस्थाओं में हुई थी।

कहने की आवश्यकता नहीं कि डी.ए.वी. अपने आरम्भिक वर्षों में आर्य समाज के रंग में रंगा हुआ था। समय बीतने के साथ-साथ ये रंग कुछ फीका भी पड़ने लगा था। ऐसे समय में डी.ए.वी. में फिर एक नये युग का सूत्रपात हुआ और श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा के शरीर छोड़ देने पर संस्था की बागडोर श्री पूनम सूरी को सौंपी गयी, जिन्होंने पाँच वर्षों के अल्पकाल में संगठन का कायाकल्प ही कर दिया। आज डी.ए.वी. लगभग 50 लाख विद्यार्थियों को, 920 संस्थाओं और 70 हज़ार से अधिक अध्यापक/अध्यापिकाओं के माध्यम से अच्छे इंसान बनाने में लगा हुआ है। यहाँ तक कि देश के प्रधानमंत्री भी डी.ए.वी. के स्वरूप और लक्ष्यों का सम्मान करते हुए और इसकी क्षमताओं और नेतृत्व पर विश्वास जताते हुए दिल से कहते हैं, "डी.ए.वी. यदि ठान ले तो कुछ भी कर सकता है, ओलिम्पिक स्वर्ण पदक की तो बात ही क्या?"

डी.ए.वी. के इस पड़ाव पर टंकारा समाचार द्वारा 'पूनम सूरी विशेषांक' निकाला जाएगा। यह एक सुखद घटना है। आदरणीय श्री सहगल जी ने इस अंक के लिए कुछ लिखने को कहा तो मन में प्रश्न हुआ कि क्या लिखा जाए? जिस कायाकल्प की बात ऊपर की है उसका विशद् वर्णन करूँ या श्री पूनम सूरी के अंतर्मन की गहराइयों की तलाश करूँ। एकाएक मेरे ज़हन में योगी अरविन्द घोष द्वारा ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व का विश्लेषण कौंध गया। ऋषि दयानन्द के बारे में संसार-भर के विद्वान् मनीषियों, चिंतकों, दार्शनिकों ने अपनी-अपनी दृष्टि से चर्चा की है। योगी अरविन्द घोष ने लिखा,

'मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की शक्ति-संपन्न मूर्ति उपस्थित है। इन दो शब्दों, जोकि हमारी भावनाओं के अनुसार एक-दूसरे के सर्वथा भिन्न है, का मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा हो सकती है–एक मनुष्य जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चक्षुओं में दिव्य तेज़ है और हाथों में इतनी शक्ति की जीवन तत्त्व से अभीष्ठ स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके।' मुझे अहसास होने लगा कि डी.ए.वी. का वर्तमान युग आध्यात्मिक क्रियात्मकता का ही युग है और इसे इसी नज़रिये से देखना चाहिए।

डी.ए.वी. के प्रधान-पद को अलंकृत करने वाले 22 महापुरुषों में महात्मा हंसराज को यदि एक ओर कर दें तो वैदिक ज्ञान-विज्ञान, विवेक और तर्क ही इनके गुणों के रूप में हमारे सामने आते हैं। आस्तिकता, ईश्वर में विश्वास, ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि में विश्वास, इस सृष्टि के आनन्दमय होने में विश्वास–इससे पहले कहीं दिखाई नहीं पड़ता। इसमें कारण भी है। किसी व्यक्ति के विचार अगर उसका चरित्र हो सकते हैं तो ये प्रक्रिया जन्म से आरम्भ होती है जिसमें माता-पिता और परिवार का बहुत बड़ा योगदान होता है।

वेद कहता भी है, *मातृमान् पितृमान् आचार्यवान्* पुरुष वेद है। आज डी.ए.वी. का परम सौभाग्य है कि इसका प्रधान-पद एक ऐसे व्यक्तित्व के हाथ में जिसके परिवार को दो पीढ़ियों पहले ऋषि दयानन्द के हाथों साक्षात् दीक्षित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आज के पाकिस्तान में स्थित जलालपुर जट्टा गाँव के मुंशी गणेशदास के यहाँ संन्यासियों और अध्यात्मवादियों आना-जाना होता था। इन संन्यासियों में स्वामी नित्यानंद ही अपने समय के विशेष अध्यात्म-पुरुष हुए और उन्हीं के हाथों मुंशीजी के पुत्र खुशहालचंद को गायत्री-मंत्र की दीक्षा दी गई, जो इस बालक के जीवन का अभिन्न अंग बनी। परिवार की आध्यामिकता में यह महत्त्वपूर्ण घटना लगती है। यही बालक खुशहालचंद, महात्मा आनंदस्वामी बनकर अपने पौत्र को अपनी गोद में खिलाता है और अपने समय के एक अन्य दिव्य संन्यासी स्वामी योगेश्वरानंद जी के माध्यम से

(शेष पृष्ठ 19 पर)

है तो दे दो....

परमात्मा को दाता के रूप में बताया है। वह अभय देने वाला हैं। वह ज्ञान प्रदाता है। वह धर्म मार्ग बताने वाला हैं। वह शरण देने वाला हैं। वह जीवन देने वाला हैं। वह बोध देने वाला है। वह दात्ता दान करने वाला है। वह सबसे बड़ा देने वाला है।

दान करे और न जतलाये ऐसा है तू दानी
तेरे भरे हुए हैं भण्डार
प्रभु जी तेरी लीला है अप्रम पार।

मोक्ष के चार मार्गो को हम दान, शील, तप और भावना के नाम भी कह सकते हैं। मोक्ष के चार मार्गों में ज्ञान को पहला स्थान दिया गया। इसी तरह मोक्ष के दूसरे जो मार्ग कहे जा रहे हैं उनमें दान को पहले नम्बर रखा गया है। मोक्ष का सरलतम मार्ग है-दान। धन के दान के लिए स्वामित्व छोड़ना पड़ता है, तब कहीं जाकर वह दान कहलाता है। ज्ञान वस्तु की तरह देने की चीज नहीं है। ज्ञान में अनुग्रह करके गुणों के दान को स्थान दिया गया है।

दान का स्वरूप:- मान लीजिए, सड़क के किनारे दुकानदार अपनी दुकान पर बैठा है। दुकानदार की आंखें हैं, पर सड़क पर जो जा रहा है, वह सूरदास है। उसे दिखता नहीं। सूरदास जिस ओर जा रहा है, रास्ते में गाय बैठी है या रास्ते में गड्ढा है। यदि वह दुकानदार उठकर उसे बचाता नहीं तो लोग यह कह देंगे कि वह तो अंधा है, पर तुम तो देख सकते हो, तुम्हारे आंखें हैं तो बचाया क्यों नहीं? भगवान ने तुम्हें आंखें दी है तो तुम्हें अंधे को बचाना चाहिए था।

एक बच्चा तैर रहा है। नहाते-नहाते बच्चा पानी में डूबने लगा तो आप क्या करेंगे? आप डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए कूद पड़ेंगे और बच्चे को डूबने से बचाएंगे। परन्तु द्वेष भाव जग गया तो बात अलग है, आप सोचने लगेगें कि बच्चा डूबे तो डूबे उसके कर्म ऐसे ही होंगे डूबते बच्चे को बचाने के लिए आप उसकी जात-पांत नहीं पूछते, किनका लड़का है, जानने के बजाय यदि आपको तैरना आता है तो बच्चा चाहे जिसका भी क्यों न हो, उसे बचायेंगे।

आप अंधे को रास्ता दिखाते हैं, डूबने वाले को बचाते हैं, ऐसे ही आपके द्वार पर कोई दीन-दु:खी आ गया है, तो आपके मन में क्या भाव जागते हैं? दीन-दु:खी को देखकर करूणा के भाव आने चाहिए।

जैसे आँखें हैं तो अंधे को बचाना कर्त्तव्य है, डूबने वाले को बचाना फर्ज है उसी तरह किसी दु:खी को देखकर उसके दु:ख दूर करने में आपकी कितनी तैयारी है? दु:खी के दु:ख दूर करने चाहिए। आपके मन में यह भाव कभी ना आये कि दु:खी व्यक्ति के साथ ऐसा होना था। पहले जन्म में देता तो आज इसे मांगना नहीं पड़ता। किस-किस कि सहायता करूं कहां तक देखू।

आपके पास है तो दीजिए:-नीति कहती है-आपके द्वार पर दीन-दु:खी जो भी आया है वह दया का पात्र है। आपके पास है तो दें। पहले लोग संयासी के लिए दरवाजे खुले रखते थे। आज तो दरवाजे प्राय: बंद ही मिलते हैं। मेरी बात नोट करना आप गृहस्थी हैं, आपके घर पर दीन-दु:खी आएंगे तो संन्यासी भी आएंगे। संन्यासी के आने की तिथि नहीं होती। आपके पास है तो दीजिए, वह चाहे संन्यासी है, या दीन दु:खी।

मेरा कहना यही है कि पाया है तो दें। इसलिए देने को यही कह रहा हूं सबसे श्रेष्ठ और सरल कोई धर्म या पुण्य है तो वह है दान। दान सरल है और श्रेष्ठ है।

दान लाभदायक है- दान स्व-पर के लिए लाभदायक है। शील का लाभ शील पालने वालों को होता है, तप का लाभ तप करने वालों को होता है और भावना का लाभ भी भावना भाने वालों को होता है, किन्तु दान का लाभ दान लेने वालों को तो होता है, दान देने वाले भी लाभान्वित होते हैं।

दान श्रेष्ठ:- दान श्रेष्ठ है, क्यों? दान श्रेष्ठ इसलिए है कि दान से सारा जगत् चलता है। गृहस्थ के जहां ज्ञानी आते हैं तो अनाथ और दीन-दु:खी भी आते हैं। आप जिस किसी का भला करते हैं उसे लाभ मिलता है। आपके पास है तो दें, दान करें। आप कंजूस मत बनो। आपका स्थान कंजूस की गिनती में नहीं आना चाहिए।

अपने सामाजिक जीवन में मैंने घर-घर जाकर देने वालों को देखा है। करोड़ वाला करोड़, लाख वाला लाख, हजार वाला हजार, जिसकी जैसी हैसियत है वह देता है। जिसके पास धन, संपति या पैसा नहीं, वह भी तन की सेवा देता है। आपने घर-घर में ऐसी बहिनों को देखा है जो पहली रोटी गाय के लिये निकालती है।

दान सर्वश्रेष्ठ है, सबसे सरल है। जन्मते बच्चे के पास क्या है? वह एकदम नग्न है, जन्मते समय कुछ नहीं तो मरते समय भी आपके साथ कुछ नहीं जाएगा। जो भी है उसे निकाल बाहर करेंगे। मतलब, आए जब कुछ नहीं और जाते समय भी वही खाली हाथ। मुझे कहना है कि जो देकर आए हैं उनको मिलता है, वे आज सुखी हैं। जिन्होंने पहले जन्म में नहीं दिया, वे आज खाली हैं। आज कई हैं जो पढ़ तो गए, डिग्रियां भी ले ली, किन्तु नौकरी नहीं मिल रही है। एक के पास एम.ए. की डिग्री है फिर भी वह रोड छाप है। उसे नौकरी क्यों नहीं मिल रही है? सोचे

मैं यह कहकर अपनी बात पूरी करूं कि आप जो भी दे सकते हैं, दें। अभय दान है, सुपात्र दान है, ज्ञान-दान है आप जो भी दान कर सकें, अवश्य करें। पहले दादा-नाना अपने बच्चों को पास बैठाकर हित शिक्षाएं देते थे, इसलिए संस्कारों से बच्चे संस्कारित थे। आज क्या स्थिति है? दादा-नाना की कोई सुनता नहीं, माता-पिता को फुर्सत नहीं। आज तो स्थिति यह है कि दादा बच्चों के साथ बैठकर टीवी देखता है। पहले दादा बच्चों को कहानियों के माध्यम से, ज्ञान की बातों के द्वारा संस्कार दिया करते थे। आज दादा या घर का कोई बड़ा भी है तो बच्चों के साथ यू-ट्यूब देखते हैं।

मेरा आपको इतना ही कहना है कि आप बच्चों को संस्कारित करें। घर-परिवार में संस्कार होंगे तो वह घर स्वर्ग-सा बन सकता है।

आप देंगे तो पायेंगे:- आप देंगे तो पाएंगे। है तो दें, जरूर दें। देने वालों को मिलता है। आपने देखा होगा-जिस पेड़ में छाया है वहां आकर आदमी तो क्या, पशु-पक्षी तक बैठते हैं। खजूर के पेड़ के पास जाकर कोई नहीं बैठता। आपके पास है तो दीजिये और कदाचित् धन देने की इच्दा नहीं है तो भी ज्ञान-दान दिया जा सकता है, अभय दान दिया जा सकता है। बच्चों को संस्कारों का दान करें। और कुछ नहीं तो घर के बच्चों को एक श्लोक सिखाएं, एक गाथा याद कराएं। यह भी ज्ञान-दान है।

ज्ञान-दान एक ऐसा दान है जिसे हर कोई दे सकता है। आप प्रेम और सदभावना का दान भी दे सकते हैं। कोई गाली दे तब भी आप हंसकर बोलें, मधुर-हितकारी बोलें। यह भी एक प्रकार का दान ही है। आप-सब मानव हैं तो दें, दान करें, दान सबसे सरल मार्ग है, जो भी दान को अपनाएगा, वह आनन्द प्राप्त करेगा। **अजय** टंकारावाला

आध्यात्मिकता, भौतिकता एवं सामाजिकता की त्रिवेणी श्री पूनम सूरी जी

❐ श्रीमती मीनू अग्रवाल

पूर्ण पवित्र नदियों का, उनके चरित्र में है समाहार।
नभ की विशालता को, जो बखूबी करता साकार॥
मनुष्यता की रक्षा करता, वो वेद कर्णधार।
सूरज जैसा प्रकाश चमकाता, वो मानव अवतार॥
रीति रूढ़ि की क्रूर जंजीरों को, विध्वंस करता वो मानव महान।
डी.ए.वी. के कल्पवृक्ष को, पुष्पित करता वो बागवान॥
पंचवर्षीय कार्यकाल को, जिसने कर्म प्रधान बनाया है।
पूनम सूरी जी नाम है उनका, जिन्होंने वेद पंचम लहराया है॥

वर्तमान काल असमंजस एवं विसंगतियों के चक्रव्यूह में फँसता जा रहा है। चरित्र निर्माण आज के युग की सबसे बड़ी माँग है। युवकों का मार्ग प्रशस्त करने के लिए डी. ए. वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी अपने नाम को सार्थक करते हुए पूर्णिमा के चाँद की तरह अलौकिक छटा बिखेरते हुए निरंतर अपने कार्य में प्रयत्नशील हैं। आपके कार्यों का वर्णन करना आकाश में तारे गिनने के समान है।

न धूप की न छाँव की, न सुख की न दुख की,
चिंता नहीं करी जिसने वैभव और आराम की।
अर्जुन बनकर जिसने कर्म त्रिशूल उठाया है,
जन-मानस के मन-उपवन में वेद का फूल खिलाया है।

स्वामी दयानंद और महात्मा हंसराज के पदचिह्नों पर चलते हुए माननीय पूनम सूरी जी निरंतर कार्यरत हैं। आपके ही प्रयासों का यह सुखद परिणाम है कि डी.ए.वी. की शाखाएँ आज भारत के सभी क्षेत्रों में फलफूल रही हैं। आपकी अनूठी जीवन शैली से प्रभावित होकर आज बिहार, झारखंड जैसे प्रदेशों की सरकारें भी आपके सहयोग के लिए व्याकुल हो रही हैं। आपके ही प्रयासों का असर है कि आज डी.ए.वी. शाखा का आँकड़ा 900 से भी अधिक ऊपर चला गया है।

दिन-दुनी रात चौगुनी सफलता का, जिसने मन में ठाना है,
वेद महिमा मंडित करने का, स्वप्न साकार बनाना है।

परम ज्ञानी, कर्मयोगी, मृदुभाषी श्री पूनम सूरी जी के प्रयासों का ये नतीजा है कि आज 15 राज्यों में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा सुचारू रूप से कार्य कर रही हैं। आपका कुशल नेतृत्व एवं निर्णायक क्षमता हमेशा हमारा मार्गदर्शन करती रही है।

श्री सूरी जी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देते हुए संपूर्ण वैदिक साहित्य एवं आर्य साहित्य को विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है। सावन की झड़ी की तरह निरंतर पत्रिकाओं का प्रकाशन आपके कुशल नेतृत्व का ही परिणाम है। इसी दिशा में महर्षि दयानंद की राष्ट्र को देन, वेदों की विश्व को देन, सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ विश्व साहित्य कोष में अग्रणीय हैं।

पत्र-पत्रिकाओं से फैली जागृति, वेद लहरी की क्रांति फैलाती।
इस ज्ञानविद आर्यविद को, संपूर्णता का एहसास दिलाती।

श्री सूरी जी का सपना रहा है कि वर्तमान युग में शिष्य और गुरु को पहले धर्म ज्ञाता होना चाहिए। इसी स्वप्न को साकार करने हेतु उनके नेतृत्व में कई प्रशिक्षण शिविरों का भी आयोजन किया जाता रहा है। चरित्र निर्माण वर्तमान युग की मूलभूत कड़ी है। इसी को चरितार्थ करते हुए विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के विकास हेतु कई शिविरों का आयोजन इनके संचालन का मुख्य हिस्सा रहा है।

वर्तमान काल में गुरू शिष्य का अनूठा रिश्ता पहचाना है,
इसी महामानव ने चरित्र निर्माण का बिगुल बजाया है।

श्री सूरी जी के अनूठे प्रयासों को सफल और सार्थक बनाते हुए आर्य जगत की अन्य कड़ियाँ भी उनके नेतृत्व एवं संरक्षण में प्रयत्नशील है। 14 फरवरी 2016 में पद्मश्री अलंकृत श्री सूरी जी एक ऐसे युगदृष्टा के रूप में अवतरित हुए, जिन्होंने स्वामी दयानंद के जन्मदिवस पर लाखों की संख्या में जनमानस को संगठित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्रस्तुत उद्बोधन जैसा महान कार्य उन्होंने करके अपना नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित करने का गौरव हासिल किया।

स्वामी जी की पद्धूलि को जिसने सर पर सजाया है,
जन्मदिन का भव्य आयोजन कर वेद प्रचार फैलाया है।

एकता, समरसता एवं विश्वबंधुत्व के प्रतीक हैं आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी। अपने व्यक्तित्व, विचारों और वक्तव्यों से अपनी वाणी में मधुर शहद जैसा आभास दिलाते हुए ये महान चेतना विश्वभर में आनंद एवं शांति का संचार करती जा रही है। उनके द्वारा किए जा रहे ऐसे अनगिनत कार्य हैं, जिन्हें शब्दों की सीमा में बाँध पाना हम जैसे साधारण मानव के लिए सूरज को रोशनी दिखाने जैसा है।

सामाजिक चेतना भी उनके कार्यों की मूख्य सूची में रही है। इसी प्रयास के फलस्वरूप श्री कैलाश सत्यार्थ के 'बचपन बचाओ' के अभियान से जुड़कर उन्होंने अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को उजागर किया। उनका मानना है बुराई कैसी भी हो उनके निवारण हेतु, आर्य समाज के अनुयायी अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ करते रहे हैं और करते रहेंगे।

श्री सूरी जी का प्रखर व्यक्तित्व बेमिसाल है, लाजवाब है,
एकता एवं विश्वबंधुत्व की, बहती मधुर रसधार है।

देश और समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए देदीप्यमान नक्षत्र, तपस्वी, कर्मयोगी, सर्जक, समाज सुधारक श्री पूनम सूरी जी को समय-समय पर विभिन्न पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। 2017 में शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए अनूठे प्रयासों को सराहते हुए उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया। हृदय से पुलकित होते हुए डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल वेलचेरी, चेन्नई के समस्त शिक्षकगण एवं छात्रगण उनका अभिनंदन करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ देते हैं। हमारा विश्वास है जब तक सूरज, चाँद-तारे रहेंगे श्री पूनम सूरी अपने कार्यों से, अपने विचारों से हमारा मार्गदर्शन करते रहे हैं और करते रहेंगे।

ज्वलनशील, प्रगतिशील इस सभ्य समाज में,
वेदों की भरी हुँकार है।
जन-जन की जर्जित काया और मन को,
अमृत पिलाती वेदों की फुहार है।
पूनम सूरी जी के प्रखर वचनों की,
महिमा अपरंपार है।

हम अनुनायियों के बने वो पथ प्रदर्शक, यही ईश्वर से हमारी दरकार है।

स्वस्थ एवं दीर्घायु काया का, परम पिता से मिले वरदान।
ताकि उनकी स्नेहिल छाया में, डी. ए. वी. बने महान॥

-क्षेत्रीय निदेशिका आंध्र प्रदेश ज़ोन-। एवं
प्रधानाचार्या डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, चेन्नई

श्रीकृष्ण और आर्यसमाज

सोशल मीडिया में एक मनोरोगी श्रीकृष्ण जी के विषय में अनाप-शनाप लिख रहा था। मैंने कहा कि अगर आप सत्य को ग्रहण करने के इच्छुक हैं तो आपको श्रीकृष्ण जी के विषय में मैं जानकारी देने को तैयार हूँ। अगर आप केवल व्यर्थ का विवाद और वितंडा करना चाहते हैं। तो मैं कोई उत्तर नहीं दूँगा। इस पर वह शांत हो गया और मुझे श्रीकृष्ण जी पर विचार लिखने का उसने आग्रह किया। श्रीकृष्ण जी पर आर्यसमाज का जो दृष्टिकोण है। वही मेरा भी मानना है। इस लेख में आर्यसमाज श्रीकृष्ण जी को जैसा मानता है। वैसा लिखा है। आप सभी से आग्रह है कि एक बार अपने हृदय में निष्पक्ष होकर इस लेख पर विचार अवश्य कीजिए। एक आर्य

लाला लालपत राय ने अपने श्रीकृष्णचरित में श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में एक बड़ी विचारणीय बात लिखी है-''संसार में महापुरुषों पर उनके विरोधियों ने अत्याचार किये, परन्तु श्रीकृष्ण एक ऐसे महापुरुष हैं जिन पर उनके भक्तों ने ही बड़े लांछन लगाये हैं। श्रीकृष्णजी भक्तों के अत्याचार के शिकार हुए हैं व हो रहे हैं।'' आज श्रीकृष्ण के नाम पर 'बालयोगेश्वर', 'हरे कृष्ण हरे राम' सम्प्रदाय, 'राधावल्लभ मत' और न जाने कितने-कितने अवतारों और सम्प्रदायों का जाल बिछा है, जिसमें श्रीकृष्ण को भागवत के आधार पर 'चौरजार-शिखामणि' और न जाने कितने ही 'विभूषणों' से अलंकृत करके उनके पवन-चरित्र को दूषित करने का प्रयत्न किया है। कहाँ महाभारत में शिशुपाल-जैसा उनका प्रबल विरोधी, परन्तु वह भी उनके चरित्र के सम्बन्ध में एक भी दोष नहीं लगा सका और कहाँ आज के कृष्णभक्त जिन्होंने कोई भी ऐसा दोष नहीं छोड़ा जिसे कृष्ण के मत्थे न मढ़ा हो। क्या ऐसे 'दोषपूर्ण' कृष्ण किसी भी जाति, समाज या राष्ट्र के आदर्श हो सकते हैं? जानिए भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र को योगीराज धर्म संस्थापक श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र में कही भी कलंक नहीं है।

श्रीकृष्ण जी महान विद्वान् सम्पूर्ण ऐश्वर्य के स्वामी थे। योगी थे। वेदांग के ज्ञाता थे। वेद ज्ञाता न होते तो विश्व प्रसिद्ध ''गीता का उपदेश'' न देते।

श्रीकृष्ण जी ने मात्र एक विवाह रूक्मिणी से किया और विवाह पश्चात् भी 12 वर्षो तक ब्रह्मचर्य का पालन किया। तत्पश्चात् प्रद्युम्न नाम का पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। ऐसे योगी महापुरुष को रास लीला रचाने वाले छलिया, चूड़ी बेचने वाला, 16 लाख शादियाँ करने वाला आदि लां शादियाँ करने वाला आदि लांछन लगाना मूर्खता के अतिरिक्त कुछ नहीं।

भगवान श्रीकृष्ण का नाम राधा के साथ जोड़ना उस महापुरूष के निष्पाप चरित्र पर कलंक लगाना है।

सम्पूर्ण महाभारत में केवल कर्ण का पालन करने वाली माँ राधा को छोड़कर इस काल्पनिक राधा का नाम नहीं है, भगवान पुराण में श्रीकृष्ण की बहुत सी लीलाओं का वर्णन है, पर यह राधा वहाँ भी नहीं है, राधा का वर्णन मुख्य रूप से ब्रह्मवैवर्त पुराण में आया है। यह पुराण वास्तव में कामशास्त्र है, जिसमें श्रीकृष्ण राधा आदि की आड़ में लेखक ने अपनी काम पिपासा को शांति किया है, पर यहाँ भी मुख्य बात यह है कि इस एक ही ग्रंथ में श्रीकृष्ण के राधा के साथ भिन्न-भिन्न सम्बन्ध दर्शाये हैं, जो स्वत: ही राधा को काल्पनिक सिद्ध करते हैं। देखिये-ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखंड के पाँचवें अध्याय में श्लोक 25, 26 के अनुसार राधा को कृष्ण की पुत्री सिद्ध किया है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण के वामपार्श्व से उत्पन्न हुई बताया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड अध्याय 48 के अनुसार राधा कृष्ण की पत्नी (विवाहिता) थी, जिनका विवाह ब्रह्मा ने करवाया। इसी पुराण के प्रकृति खण्ड अध्याय 49 श्लोक 35, 36, 37, 40, 47 के अनुसार राधा श्रीकृष्ण की मामी थी। क्योंकि उसका विवाह कृष्ण की माता यशोदा के भाई रायण के साथ हुआ था। गोलोक में रायण श्रीकृष्ण का अंशभूत गोप था। अत: गोलोक के रिश्ते से राधा श्रीकृष्ण की पुत्रवधु हुई। क्या ऐसे ग्रंथ और ऐसे व्यक्ति को प्रमाण माना जा सकता है? हिन्दी के कवियों ने भी इन्हीं पुराणों को आधार बनाकर भक्ति के नाम पर श्रृंगारिक रचनाएँ लिखी हैं। ये लोग महाभारत के कृष्ण तक पहुँच हीन ही पाए। जो पराई स्त्री से तो दूर, अपनी स्त्री से भी बारह साल की तपस्या के बाद केवल संतान प्राप्ति हेतु समागम करता है, जिसके हाथ में मुरली नहीं, अपितु दुष्टों का विनाश करने के लिए सुदर्शन चक्र था, जिसे गीता में योगेश्वर कहा गया है। जिसे दुर्योधन ने भी पूज्यतमों लोके (संसार में सबसे अधिक पूज्य) कहा है, जो आधा पहर रात्रि शेष रहने पर उठकर ईश्वर की उपासना करता था, युद्ध और यात्रा में भी जो निश्चित रूप से संध्या करता था। जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र को ऋषि दयानन्द ने आप्त पुरुषों के सदृश बताया, बंकित बाबू ने जिसे सर्वगुणान्ति और सर्वपापरहित आदर्श चरित्र लिखा, जो धर्मात्मा की रक्षा के लिए धर्म और सत्य की परिभाषा भी बदल देता था। ऐसे धर्म-रक्षक व दुष्ट-संहारक कृष्ण के अस्तित्त्व पर लांछन लगाना मूर्खता ही है।

हम अपने महापुरुषों व बलिदानियों का चरित्र हरण नहीं होने देंगे। देखिये श्रीकृष्ण जी के विषय में महाभारत में क्या कहा गया है...

दुर्योधन-यह मैं अच्छी प्रकार जानता हूँ कि तीनों लोकों में इस समय यदि कोई सर्वोधिक पूज्य व्यक्ति है तो वह विशाल-लोचन श्रीकृष्ण हैं। (महाभारत उद्योगपर्व 88/5)

धृतराष्ट्र- श्रीकृष्ण अपने यौवन में कभी पराजित नहीं हुए। उनमें इतने विशिष्ट गुण हैं कि उनकी परिगणनाा करना सम्भव नहीं है।

(महा. द्रोणपर्व 18)

भीष्म पितामह- श्रीकृष्ण द्विजातीयों में ज्ञानवृद्ध तथा क्षत्रियों में सर्वाधिक बलशाली हैं। पूजा के ये दो ही मुख्य काण होते हैं जो दानों श्रीकृष्ण में विद्यमान हैं। वे वेद-वेदांग के अद्वितीय पण्डित तथा बल में सबसे अधिक हैं, दान, दया, बुद्धि, शूरता, शालीनता, चतुराई, नम्रता, तेजस्विता, धैर्य, संतोष इन गुणों में केशव से अधिक और कौन है? (महा. सभा. 38/18-20)

वेदव्यास-श्रीकृष्ण इस समय मनुष्यों में सबसे बड़े धर्मात्मा, धैर्यवान् तथा विद्वान् हैं। (महा. उद्योग. अध्याय 83)

अर्जुन-हे मधुसूदन्! आप गुणों के कारण 'दाशार्ह' हैं। आपके स्वभाव में क्रोध, मात्सर्य, झूठ, निर्दयता एवं कठोरतादि दोषों का अभाव है। (महा. वनपर्व.12/36)

युधिष्ठिर-हे यदुवंशियों में सिंहतुल्य पराक्रमी श्रीकृष्ण। हमें जो यह पैतृक राज्य फिर प्राप्त हो गया है। यह सब आपकी कृपा, अद्भुत

राजनीति, अतुलनीय बल, लोकोत्तर बुद्धि-कौशल तथा पराक्रम का फल है। इसलिए हे शत्रुओं का दमन करने वाले कमलनेत्र श्रीकृष्ण आपको हम बार-बार नमस्कार करते हैं। (महा. शान्तिपूर्व 43)

बंकिमचन्द्र- उनके (श्रीकृष्ण) जैसा सर्वगुणान्वित और सर्वपापरहित आदर्श चरित्र और कहीं नहीं है, न किसी देश के इतिहास में और न किसी काल में। (कृष्णचरित्र)।

चमूपति-हमारा अर्घ्य उस श्रीकृष्ण को है, जिसने युधिष्ठिर के अश्वमेध में अर्घ्य स्वीकार नहीं किया। साम्राज्य की स्थापना फिर से कर दी, परन्तु उससे निर्लेप, निस्संग रहा है। वही वस्तुत: योगेश्वर श्रीकृष्ण का योग है। (योगेश्वर कृष्ण, पृष्ठ 352)

स्वामी दयानन्द-देखा! श्रीकृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरण-पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।

पाखंड छोड़े आओ वेद विद्या ग्रहण करे।
सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय॥
आओ लौट चल वेदों की ओर॥

- वेद प्रकाश पुस्तक से साभार

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेताः योगेश्वर श्रीकृष्ण

❒ सत्यपाल आर्य एडवोकेट

आर्यवर्त में श्रीराम और श्रीकृष्ण दो ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्हें राष्ट्रपुरूष और इतिहासपुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है। श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और श्रीकृष्ण लीला पुरुषोत्तम हैं। पुरुषोत्तम दोनों हैं। पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम पुरुष अर्थात् आर्य। आर्यत्व की दृष्टि से जीवन को उत्तमता की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले ये दोनों ऐसे अनुकरणीय महापुरुष हैं जिनसे युग-युगान्तर तक मानवजाति प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

श्रीकृष्ण के समान प्रगल्भ बुद्धिशाली, कर्तृव्यवान, प्रज्ञावान, व्यवहारकुशल, ज्ञानी पराक्रमी पुरुष आज तक संसार ने नहीं हुआ है। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं माना जाना चाहिए। वे ध्येयवादी के साथ-साथ व्यवहारवादी भी थे और दोनों सीमाओं के निपुण ज्ञाता थे। सत्यनिष्ठा के समान ही कुटिल राजनीति अर्थात् राजधर्म के सफल उपदेष्टा थे। वे गृहस्थ जीवन प्रेमी होने के साथ अत्यन्त संयमी, सदाचारी, चरित्रवान, एक पत्नीव्रती और योग विद्या में पारंगत योगेश्वर थे। संक्षेप में यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीय अस्मिता और राजधर्म के मूर्तिमन्त प्रतीक थे।

दुःख का विषय है कि पुराणों ने 'चोर-जार-शिखामणि' के रूप में जिस श्रीकृष्ण का चित्रण किया है, उसका लेशमात्र अनुमोदन अथवा चर्चा महाभारत में कहीं भी नहीं है। यह देश और मानवजाति का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि श्रीकृष्ण का वह विकृत स्वरूप तो घर-घर में प्रचलित है, परन्तु लो महाभारत में वर्णित सही रूप है, जो राष्ट्र के लिए अक्षय प्रेरणा का स्रोत बन सकता है, उसकी चर्चा ही दुर्लभ है।

महाभारत श्रीकृष्ण का प्रामाणिक जीवन चरित्र है, महर्षि वेदव्यास सारे महाभारत में एकमात्र श्रीकृष्ण को ऐसे व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करते हैं, जो न कभी टूटता है, न झुकता है, न पलायन करता है। श्रीकृष्ण न रोते हैं, न पछताते हैं और न कभी जय-पराजय या जीवन-मृत्यु की चिन्ता करते हैं परन्तु उन्हें अपने पुरुषार्थ, कर्तत्व और नीतिमत्ता पर पूर्ण विश्वास हैं।

हतो वा प्राप्यति स्वर्ग, जित्वा तु मोक्ष्यसे महीम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय! युद्धाय कृतनिश्चय॥

श्रीराम ने जिस युग में, जिन परिस्थितियों में समाज का मार्गदर्शन और नेतृत्व किया, वह परिस्थितियां उतनी जटिल नहीं थी, जितनी श्रीकृष्ण को विरासत में मिली थीं।

श्रीराम लोकप्रिय, जननायक, राजपुत्र और युवराज थे। उसके सभी भाई बन्धु, परिवार और प्रजा उसकी ज्येष्ठता और श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे। उनके मार्गदर्शक ऋषि और मनीषी थे। समाज मर्यादा के पालन का सम्मान करता था।

परन्तु श्रीकृष्ण को विरासत में सर्वथा प्रतिकूल परिस्थितियां मिली थी। व्यक्ति समाष्टि और समाज से बड़ा बन चुका था। सामाजिक मर्यादाओं और वर्जनाओं को तोड़ने में अपनी श्रेष्ठता और शान समझाता था।

वे स्वनिमित व्यक्ति थे। सभी साधनों और साथियों का समय और सृजन उन्हें स्वयं करना पड़ा। श्रीकृष्ण होश सम्भालने के बाद जीवन के प्रत्येक क्षण में अन्तरात्मा से प्रेरित थे। उनका जीवन एक पहाड़ी नदी के समान है, जो उछलती, कूदती चट्टानों को तोड़ती, दुर्गम उपत्यकाओं में अपना मार्ग स्वयं बनाती और बरसात में अपने कूल-किनारों की मर्यादाओं को भग करती लगातार आगे बढ़ती जाती है।

श्रीकृष्ण व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों और महत्त्वाकांक्षों के विरूद्ध का नेतृत्व करते हैं। वह राजपुत्र, युवराज राजपरिवार के सुविधासम्पन्न सदस्य न होकर जेल में बन्द माता-पिता की संतान के रूप में एक सामान्य शोषित, पीड़ित, वंचित युवा के रूप में पल बढ़े और शोषित वंचित, दलित, पीड़ित आतंक के सायें में जीने को मजबूर जन-जन के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होते हैं।

उनके जीवन का लक्ष्य अधिनायकवादी, प्रवृत्तियों और दलित नागरिकों के अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना था। श्रीकृष्ण अपने युग में लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेता थे। उन्हें विरासत में ऐसा समाज मिला जिसमें देश के नागरिकों को अभिव्यक्ति के अधिकार की बात तो दूर, अपने खाने-पीने, सोचते अपने सम्बन्धों को ठीक ढंग से निर्वहन करने का अधिकार नहीं था। प्रजाजनों को अपने खून-पसीने से प्राप्त साधनों के उपयोग व उपभोग करने की स्वतन्त्रता नहीं थी।

गोपालन दुग्ध उत्पादन और कृषि उनका मुख्य व्यवसाय था। गऊएं पालकर दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर आदि प्रजा तैयार करती थी, परन्तु इन उत्पादों के उपभोग और उपयोग पर राजा का नियन्त्रण था।

कंस ने तत्कालीन लोकप्रिय राजा और अपने पिता उग्रसैन को बलात् राजगद्दी से हटाकर, लोकमर्यादा का गला घोंटकर स्वयं शासक बन बैठा। अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों को मथुरा से पलायन करने को विवश कर दिया या जेल में डाल दिया, जिसमें श्रीकृष्ण के माता-पिता भी शामिल थे। प्रजा आतंक की छाया में जीवन जीने को विवश थी। नागरिक अधिकार प्रतिबन्धित थे। श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा तीनों भाई-बहनों का बचपन अपने माता-पिता से दूर वंचितों के रूप में व्यतीत हुआ।

श्रीकृष्ण ने इस समस्त सामाजिक और राजनैतिक परिवेश के विरूद्ध जनमत तैयार किया। अपने समवयस्क ग्वाल-बाल, बालाओं और गोपालकों के मानस में विद्रोह का बीजारोपण किया। उन्हें उनके मौलिक अधिकारों से परिचत कराया। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए लड़ना सिखाया।

उसने युवा साथियों को संगठित किया। उन्हें शस्त्र, शास्त्र, व्यायाम और मल्लयुद्ध के लिए प्रेरित किया। युवा शक्ति के मन-मस्तिष्क आत्मा में वीरता के भाव भरे। उन्हें आने वाले कल की समस्याओं से लड़ने के लिए तैयार करते हुए कहा-

पत्थर सी हों मांस पेशियाँ, लोहे से भुजदण्ड अभय।
नस-नस में हो लहर आगे की, तभी जवानी पाती जय॥

श्रीकृष्ण युवा संगठन का स्वयभू नेता बना, जिसमें सभी सक्षम युवा, गोप-गोपियाँ शामिल थे। सभी युवा सदाचारी, चरित्रवान और संघर्षशील भाई-बहन के रूप में संगठन से जुड़े। उस संगठन का नाम रखा गया 'राधा'। 'राधा' नाम की युवा सेवा में 16000 से अधिक गोप-गोपियां शामिल थे, जो श्रीकृष्ण की एक आवाज पर इकट्ठे होकर जीवन अर्पण करने को तैयार थे।

उस संगठन का प्रतीत चिह्न था-बांसुरी अथवा मुरली। जो

श्रीकृष्ण की आवाज बन गई। श्रीकृष्ण ने युवा सेना के सर्वोच्च अधिकारी के रूप में 'राधापति' या सेनापति का पद ग्रहण किया। श्रीकृष्ण ने अपनी सेना 'राधा' के सामने आततायी कंस को चुनौती देते हुए कहा-

ओं मदहोश, बुरा फल है शूरों के शोणित पीने का,
गिन-गिन कर देना होगा, मोल इक-इक बूँद पसीने का।
कल होगा इंसाफ यहाँ, किसने क्या किस्मत पाई है,
अभी नींद से जाग रहा युग, यह पहली अंगड़ाई है।

शारीरिक उन्नति के तैयार युवाओं के लिए दुग्ध उत्पादों के मथुरा भेजने पर श्रीकृष्ण ने पूरी पाबन्दी लगा दी। श्रीकृष्ण ने गोपालकों को अपनी गऊओं के दूध, दही, मक्खन, घी अपने पुत्र-पुत्रियों, गोप-गोपियों युवा सेना को देने का आह्वान किया।

गोप-गोपियों के माता-पिता, गोपाल कंस के आतंक से आतंकित थे। उन्होंने श्रीकृष्ण की सलाह की अवहेलना की। दूध, दही, घी, मक्खन मथुरा भेजना जारी रखा।

श्रीकृष्ण ने अपने सैनिक गोप और गोपियों को मथुरा जाने वाले दूध, दही, घी, मक्खन को लूटकर खाने का गुप्त आदेश दिया। बलात् जाने वाली दूध, दही की मटकियां को गुलेल से तोड़ने का गुप्त आदेश दिया। उद्दण्ड और उत्श्रृंखल युवा शक्ति की उत्श्रृंखलता, उद्दण्डता का मुँह कंस विरोध में रूपान्तरिक कर दिया। श्रीकृष्ण की सलाह उनके मनोरंजन मनोविनोद और मस्ती का साधन बन गया।

राजा कंस इस जन आन्दोलन से तिलमिला उठा। उसने साम, दाम, भेद हर तरीके से इस जन आन्दोलन को कुचलने के प्रयास किए और अन्त में जन नायक राधापति सेनानायक श्रीकृष्ण को रास्ते का कांटा समझकर मारने के लिए उपाय किए, परन्तु धनुर्धर, असिधर, गदाधर सुदर्शन चक्रधर, वीर जननायक श्रीकृष्ण का कंस बाल भी बांका न कर सका।

यह मानव जाति के इतिहास में प्रथम जन असहयोग आन्दोलन था। लोकतन्त्र की पहली सीढ़ी थी। अब श्रीकृष्ण ने आतंक की नाभि पर प्रहार करने का निर्णय किया। वे जीवन-मृत्यु की परवाह न करते हुए कंस के राज भवन में पहुँच मल्लयुद्ध के लिए प्रस्तुत हो गए। कंस ने अपने शक्तिशाली कुख्यात मल्लों को श्रीकृष्ण और बलराम की हत्या करने का कूट सन्देश और संकेत दिया।

परन्तु श्रीकृष्ण और बलराम मल्लयुद्धों में विजेता रहे। उल्टे उन्होंने कंस के गल्लों का प्राणहरण कर लिया। बाजी उलटते देख अराजकता और हाहाकार की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसका लाभ उठाते हुए श्रीकृष्ण ने कंस का काम तमाम कर दिया तथा बलराम ने कंस के भाई सुनामा को मौत की नींद सुला दिया।

भारी जोश-खरोश, हंगामे व अराजकता के बीच श्रीकृष्ण ने जन-जन की आवाज कंस के पिता उग्रसैन को राजगद्दी सौंपकर लोकतन्त्र की विजय की घोषणा कर दी। यह लोकतन्त्र की पहली विजय थी जिसका श्रेय श्रीकृष्ण की सेना 'राधा' और गोप-गोपियों को था। राधापति कृष्ण लोकतन्त्र के प्रथम प्रणेता बन गए।

सहमन्त्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति
-647, सैक्टर-15 ए, हिसार, मो. 9416241024

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

अराजकता, भ्रष्टाचार, शोषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट

अमीर और भी अमीर/गरीब और भी गरीब

जनता कंगाल-नेता मालामाल

क्या इसी के लिए हम स्वतन्त्र हुए थे?

आइए, मिलकर इन सबके विरूद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें।

ठा. विक्रम सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष

राष्ट्र निर्माण पार्टी

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल

डॉ. वरूण वीर
राष्ट्रीय महासचिव

क्षेत्रीय कार्यालयः ए-41, लाजपतनगर II, निकट-मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-24, फोन-: 011-45791152, 29842527, 9313254938
प्रान्तीय कार्यालयः मोदीपुरम बाईपास, निकट-रेलवे फाटक, मेरठ (उत्तर प्रदेश), फोन-0121-3191555, 9971284450, 9917063562

बच्चों को देवें उत्तम संस्कार

❒ कृष्णचन्द्र टवाणी

हर माता-पिता का यही सपना होता है कि उनका बच्चा प्रतिभावान हो एवं संस्कारित हो। इसके लिए अभिभावक बच्चे को जितना अधिक समय देंगे उतने ही वे योग्य बनेंगे। बच्चों को दिया हुआ समय जमा पूंजी के समान है जो ब्याज सहित वापस मिलता है। आजकल के बच्चों को मीडिया, टी.वी., मोबाइल एवं इंटरनेट ने बहुत बुद्धिमान बना दिया है इसलिए माता-पिता उन्हें केवल अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति न समझें। समस्या यह हो गयी है कि आजकल के माता-पिता का व्यवहार बच्चों के साथ स्नेह एवं ममता का कम है अधिकारों का ज्यादा है। बच्चा न तो अपनी रूचि के अनुसार खेल सकता है न पढ़ सकता है। उसे जो भी करना है अपनी माँ या पिता की इच्छा अनुसार ही करना होता है। माता-पिता अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति बच्चे से करवा रहे हैं जिसका परिणाम यह हो रहा है कि बच्चों में सहनशीलता की कमी आ गई हैं। वे बौद्धिक रूप से तो विकसित होते जा रहे हैं किंतु संस्कारित रूप से पिछड़ते जा रहे है। जब बच्चों में संस्कार नहीं आयेंगे तो उनके जीवन की भूमिका अच्छी नहीं हो सकती। आजकल एक छोटे बच्चे का जीवन भी सरल नहीं रहा, वह दो-तीन वर्ष की अवस्था से ही झूठ बोलना सीख जाता है। इसका कारण है वह अपने पिता को रोज मोबाइल फोन पर झूठ बोलते हुए सुनता एवं देखता है अत: वैसे ही संस्कार उसमें आ जाते हैं। वह जो देखता है उसे ही ग्रहण कर लेता है।

माता-पिता की भूमिका माली की होनी चाहिए:- बच्चों का हित, उनमें सुसंस्कार का सिंचन या उनके पालन पोषण के लिए सोचता हूँ, तो मेरे नेत्रों के समक्ष बाग के माली की तस्वीर उपस्थित हो जाती है। माली स्नेहापूर्वक बीज बोता है, प्रेमपूर्वक उसे सींचता है और निहारता है। इतने जतन के बाद पौधा स्फुरित होता है तथा उसमें सुन्दर पुष्प एवं फल पुष्पित व पल्लवित होते हैं। इसी तरह माता, पिता, शिक्षक, शिक्षिकाओं को बालक के सर्वागीण विकास के लिए एक सफल माली की भूमिका निभानी चाहिए। उसके स्वतन्त्र स्वभाव और आचार-विचार के लिए हमें कभी भी क्रूरता, तिरस्कार एवं क्रोध की भूमिका नहीं निभानी चाहिए। अपितु स्नेह, वात्सल्य व प्रेम से परिपूर्ण माता, बहन या माली की आत्मीयता भरी भूमिका निभानी चाहिए।

बच्चों की खुद की अपनी भावना होती है। उन्हें भी अपनी स्वाभिमान होता है। वे भी अपनी मौलिक इज्जत समझते हैं। उन्हें आप प्यार से समझाकर, अपना बनाकर सिखायेंगे तो अवश्य सीखेंगे। अ-आ-इ-ई या ए.बी.सी.डी. कैसे लिखें, पुस्तक कॉपी या युनिफार्म को कैसे रखना, खाते समय हाथ धोकर खाना, घर में बड़े लोगों को प्रणाम करना, बाहर से आये अतिथियों का सम्मान सत्कार कैसे करना, मोहल्ले में पड़ोसियों के बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना एवं खेलना आदि छोटी-छोटी बातें आप शुरु से ही बच्चे को प्यार से सिखायें तो वह हँसते-हँसते सीख जायेगा। ऐसा करने से बच्चे में शुरु से अच्छे संस्कार पनपेंगे तथा वह बड़ा होकर एक आदर्श नागरिक एवं जिम्मेदार व्यक्ति बनेगा।

बच्चों के कार्यो की देख-रेख करें:-आजकल माता-पिता इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें बच्चों से बातचीत करने का समय ही नहीं मिलता है। माता-पिता अपने-अपने कार्यो में व्यस्त रहते हैं कि उनको बच्चों की पढ़ाई, कोचिंग आदि में वे क्या कर रहे हैं? कौन मित्र है? कम्प्यूटर तथा मोबाइल, वाट्स एप, फेसबुक आदि में वे कितना समय गप्प सप्प करने में लगाता है इसकी जानकारी वे नहीं लेते हैं। बच्चा बड़ा होकर किशोर हो जाता है लेकिन माता-पिता उसकी किशोरावस्था से जुड़ी समस्याओं को समझने की जरूरत नहीं समझते। आजकल परिवार बहत छोटे हो रहे हैं अधिकांश माता-पिता नौकरी के कारण शहरों में अकेले रहते हैं। दादा-दादी या बड़े बुजुर्ग उनके साथ नहीं रहते, ऐसी स्थिति में किशार बच्चों को कोई गलत साथी मिल जाये तो वह जल्दी ही भटक जाता है। बुरी संगत का असर जल्दी होता है। पहले शौकिया किशोर, देखा-देखी गलत वस्तुओं का सेवन शुरु करता है। बाद में वह उसका आदी हो जाता है। किशोर बालकों में भटकाव की स्थिति आवे उससे पूर्व माता-पिता को सतर्क होना चाहिए। ताकि वह बच्चों को गलत रास्ते पर जाने से रोक सकते हैं। किशोर बालकों के बारे में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए-

❑ इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि आपके बच्चों की मित्रता किन बच्चों के साथ है। उन बच्चों तथा उनके परिवार का आचरण कैसा है?

❑ किशोर बच्चों के साथ अपना व्यवहार दोस्ताना बनाइये तथा छुट्टी के दिन उनके साथ ही बितायें।

❑ किशोर बच्चों को बाहर होटल में अकेले पार्टी आदि करने या घूमने के लिए जाने की इजाजत मत दीजिए।

❑ परीक्षा में कम नम्बर आने पर बच्चा स्वयं दु:खी होता है। उसको इस नाजुक समय में डाँटने की बजाय उसकी हिम्मत बढ़ानी चाहिए। क्योंकि असफलता से ही सफलता की ओर जाने का मार्ग निकलता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि महान व्यक्तियों के जीवन की हर असफलता ने उन्हें ओर अधिक परिश्रम करने के लिए उत्साहित किया है। महात्मा गांधी स्कूल की पढ़ाई के दौरान थर्ड डिवीजन में उत्तीर्ण होते थे। अथक प्रयास एवं ईश्वर पर भरोसे के कारण वह संसार के सबसे सफल व्यक्ति बनकर सदा के लिए अमर हो गये। इसलिए बच्चों को केवल परीक्षा में नहीं वरन् संपूर्ण जीवन में सफल होने का पाठ पढ़ायें।

❑ बच्चों के सामने कोई भी ऐसा गलत कार्य नहीं करें जिसका अनुकरण कर वो भी गलत मार्ग अपनावें। बच्चों को सही मार्गदर्शन देकर उनके जीवन को सफल बनायें।

❑ बच्चों की सोच को सकारात्मक बनायें। परीक्षा में असफल होने पर उन्हें निराश न करें। बलिक ईश्वर पर विश्वास रख पुन: पूर्ण मनोयोग व एकाग्रता से परीक्षा की तैयारी में जुट जाने की प्रेरणा देवें जिससे वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो सके।

सारांश यही है कि माता-पिता अपने बच्चों को सदा यही शिक्षा देवें कि उनके जीवन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति व संस्कारों को अपनाना ही होना चाहिए। हमारी भारतीय संस्कृति ही श्रेष्ठ है। इसका ज्ञान होने पर वे कभी पाश्चात्य संस्कृति को नहीं अपनायेंगे। उनमें ईश्वर के प्रति, अपने माता-पिता तथा गुरुजनों के प्रति श्रद्धा विश्वास बढ़ेगा तथा वे सदा उनका सम्मान करेंगे। यदि बच्चों का जीवन प्रारंभ से ही संस्कारित होगा तो वो निश्चित रूप से परिवार, समाज व राष्ट्र का उज्जवल भविष्य बनेगा।

- ज्ञानमंदिर, सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़ (राज), मो.9252988221

महिलाओं को आगे बढ़ाना हमारा दायित्व

❒ रामचरण यादव

समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति बड़ी विचित्र है, जो स्थिति महिलाओं की होनी चाहिए, हकीकत में न होने के कारण ही समाज में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ उत्पन्न होती है जिसका प्रभाव समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है। जब भी समाज सुधार की बात चलती है तब तब महिलाओं को पीछे रख देते हैं। सबसे पहले हमें इसी भूल को सुधारना होगा, किसी भी परिस्थिति में महिलाओं को पीछे रख देते हैं। सबसे पहले हमें इसी भूल को सुधारना होगा, किसी भी परिस्थिति में महिलाओं को सीमित दायरे में कैद न करें बल्कि वो सभी कार्य जो पुरुष वर्ग को सौंप गये हैं उन्हें भी भली भांति सम्पन्न कराने में महिलाएं सखम हैं फिर भला उन्हें इस कार्य से वंचित क्यों रखा जाये। जबकि वे इस कार्य के लिए त तत्पर हैं। आज के वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति ठीक नहीं है वे किसी हद तक सामने आने का प्रयास करती है अंत में समाज की पुरानी रीति रिवाजों की कठोर दीवारें से अपना सिर टकारा टकरा कर चूर कर देती हैं अपनी इच्छाएं, आकांक्षाएं लेकिन अब हमें चेतना होगा और महिलाएं जो कि घर, परिवार, समाज व देश के परिवर्तन का मुख्य स्तम्भ है उसे और अधिक सुदृढ़ करना होगा। वास्तव में महिलाओं की ओर हमारा ध्यान कम ही जाता है जबकि हमें महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास की वो सारी योजनाओं से अवगत कराना चाहिए जिनके माध्यम से वे एक दिशा कायम कर सकें। समाज में अक्सर बाल विवाह व दहेज प्रथा का शिकार ये महिलाएं ही बनती है।

शिक्षा के अभाव में चूल्हा चक्की में जीवन भर घुट-घुट कर जीती हैं। बिलखती है, रोती है और सोचती है अपने बच्चों के भविष्य के बारे में। जो खुद अंधेरे में रहता हो वह दूसरे को प्रकाश कैसे दे सकता है, जो स्वयं भूखा हो वह दूसरे को भोजन कैसे दे सकता है ठीक उसी प्रकार महिलाएं जो अशिक्षित, अनभिज्ञ अस्वस्थ है वह बच्चों तथा समाज को नई दिशा कैसे प्रदान कर सकती है। समाज की उन्नति का आधार महिला ही है। महिलाओं के अधिकार को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें आगे लाने के प्रयास बहुत जरूरी हैं। महिलाएं जो त्याग, सेवा और वात्सल्य की जीति जागती तस्वीर है उस तस्वीर को केवल मनोरंजन का साधन, घर को सजाने संवारने के लिए नौकरानी, बच्चों के लिए खिलौना, पुरुषों के लिए दासी पैरों की जूती या नर्क का द्वार न बनने दें। ये नारी कमजोर जरूर है किन्तु पतन के लिए अकेली दोषी नहीं पुरुष भी इसमें शामिल है।

हमें तो महिलाओं पर गर्व करना चाहिए जिन्होंने इतनी पीड़ा सहने के बाद भी समाज व देश को ऐसे लाल दिये जो आदर्श बन गये फिर भी इनकी स्थिति दयनीय हैं। बचपन से ही नारी जाति के प्रति पुरुषों का विद्रोह रहा है। लड़की को स्कूल भिजवाने में आपत्ति प्रगट करना किसी ऊंची सोसायटी से दूर रखना एवं विभिन्न कलाओं को हासिल करने में रोक लगाना इत्यादि, परिणाम स्वरूप महिलाओं कर इच्छाओं का शोषण होते रहा वे समाज में पुरानी रश्मों की चादर ओढ़े बेजान पत्थर की मूरत बन पुजती रही। बाल विवाह, पर्दा प्रथा और किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए रोक लगाने में पुरुष वर्ग की अहम् भूमिका रही बेबस, लाचार किन्तु समझदार होते हुए भी मूर्ख, शराबी, अनाड़ी पतियों के हाथ पिटती रही और यही उनकी नियति बन गई। इतिहास साक्षी है महिलाओं के बिना कोई भी कार्य सफलता को नहीं पाता, देश के विकास में शुरु से ही महिलाओं का विशेष योगदान रहा है आज भी उनके सहयोग की हमें जरूरत है। बिना नारी सहयोग के हर कार्य अधूरे हैं ये पूरे तभी होंगे जब हम इन्हीं भी समानता का अधिकार देंगे, उनका यथोचित आदर करेंगे और साथ ही उनके अंदर की हीन भावना को समाप्त कर आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करें।

उपरोक्त बातों के अलावा कुछ विशेष तथ्यों पर आवश्यक रूप से ध्यान देना अनिवार्य है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, पुरानी रूढ़ियाँ जो नारियों के लिए बेड़ियाँ बन चुकी हैं उन्हें पूर्ण रूप से समाप्त करें। स्त्रियों को समाज में उचित सम्मान के साथ साथ अन्य सभी प्रकार का ज्ञान प्रदान करें जो उन्नति के लिए आवश्यक हो। साक्षरता का अभियान समाज में व्यापक रूप से चलाया जाये विशेष महिलाओं को शिक्षित करना हमारा प्रथम कर्तव्य हो। समाज में महिला मंडलों की स्थापना भी की जाये ऐसा अगर हो जाये तो निश्चित ही समाज में अद्भुद परिवर्तन आयेगा। महिलाओं को आगे लाना अर्थात् समाज का समुचित विकास करना वैसे भी महिलाओं का आगे बढ़ाना हमारा दायित्व है अब देखना ये है कि हम यह दायित्व किस प्रकार निभाते हैं।

- बैतुल

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 21 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

पर्याप्त सोच-विचार करने के उपरांत ही बोलना चाहिए

❒ सीताराम गुप्ता

डॉक्टर रोगी को विशेष रूप से अत्यधिक कमज़ोर अथवा गंभीर रोग से ग्रस्त व्यक्ति को बोलने से बिल्कुल मना करते हैं। इसीलिए कई आधुनिक अस्पतालों ने तो रोगियों से मिलने का समय ही निश्चित कर रखा है और मरीज़ों के पास ज़्यादा देर तक रुकने की मनाही भी कर रखी है। मिजाज़पुर्सी के लिए आना और मरीज़ से बातें करना व उसको दिलासा देना उसके हित में ही होता है फिर क्यों डॉक्टर बाहरी लोगों को मरीज़ से मिलने और मरीज़ के बोलने पर पाबंदी लगाते हैं? इसका क्या कारण हो सकता है? कारण स्पष्ट है। बोलने से रोगी थक जाता है क्योंकि बोलने में ऊर्जा व्यय होती है। बोलने में ही नहीं बोलने के प्रयास व सोचने की प्रक्रिया में भी ऊर्जा व्यय होती है। रोगी की ऊर्जा का स्तर वैसे ही कमज़ोर होता है अत: जब वो अधिक सोचेगा या बोलेगा तो उसकी शेष ऊर्जा भी नष्ट हो जाएगी। ऊर्जा हमारे काम करने में ही नहीं रोगमुक्ति व उपचार में भी सहायक होती है। इसी से साधना में ही नहीं दैनिक जीवन में भी मौन को बड़ा महत्त्व दिया गया है। मौन को सर्वोत्तम भाषण कहा गया है।

यदि रोगी शांत रहेगा तो उसकी ऊर्जा रोगमुक्ति व उपचार की दिशा में प्रवाहित होकर उसे अपेक्षाकृत शीघ्र स्वस्थ करने में सहायक होगी। प्रश्न उठता है कि क्या एक स्वस्थ व्यक्ति के बोलने से उसके स्वास्थ्य पर भी कोई दुष्प्रभाव पड़ता है? बोलना एक स्वाभाविक बात है लेकिन हर चीज़ की एक सीमा होती है। बोलने की भी एक सीमा होनी चाहिए। सभी का मानना है कि न तो अधिक बोलना ही श्रेयस्कर होता है और न बिल्कुल चुप रहना ही उत्तम होता है इसलिए एक स्वस्थ व्यक्ति भी कम बोले तो अच्छा है। इसके कई कारण हैं। पहला तो यही कि बोलने में ऊर्जा व्यय होती है। यदि हम अपनी सारी ऊर्जा बोलने में ही व्यय कर देंगे तो काम करने के लिए ऊर्जा बचेगी ही नहीं। दूसरे हम जितना ज़्यादा बोलते हैं गलत अथवा निरर्थक बोलने की संभावना बढ़ जाती है। जो ज़्यादा बोलते हैं उन्हें सोचने का वक़्त नहीं मिल पाता या कह सकते हैं कि जो सही बोलने के लिए सोचने की ज़हमत नहीं उठाते वे लोग ही ज़्यादा बेकार की बक-बक करते हैं।

जो लोग जितना कम बोलते हैं जीवन में प्राय: अधिक संतुलित रहते हैं। जो लोग जितना ज़्यादा बोलते हैं जीवन में उतना ही कम कर पाते हैं। उनकी करनी और कथनी में बहुत अंतर रहता है। सीधी सी बात है यदि हम बोलते ही रहेंगे तो काम कब करेंगे। यदि बोलने में ही सारी ऊर्जा नष्ट कर डालेंगे तो कार्य करने के लिए ऊर्जा बचेगी ही नहीं। हम चाहकर भी कुछ कर पाने में असमर्थ होंगे। जो लोग बहुत अधिक बोलते हैं गलत बोलने की संभावना भी उतनी ही अधिक बढ़ जाती है। ऐसे लोग उचित विचार करने के उपरांत सही-सही बोलने की बजाय जो कुछ मुंह में आए बकने लगते हैं। ऐसे व्यक्तियों की विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है। लोग उनसे उलझने की बजाय उनसे दूर भागने में ही अपनी भलाई समझते हैं। ऐसे लोग सही लोगों से कटकर बेकार लोगों के संपर्क में रह जाने को विवश होते हैं। सही बोलना भी किसी कला से कम नहीं। जीवन में सफलता के लिए इस कला का विकास अनिवार्य है।

यदि हम कम तथा संतुलित व सार्थक बोलेंगे तो हमारी करनी और कथनी में अंतर नहीं रहेगा। इससे समाज में न केवल हमारी विश्वसनीयता व प्रतिष्ठा बढ़ेगी अपितु हमारे आत्मसम्मान में भी वृद्धि होगी जो हमारे अपने विकास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आत्मसम्मान से भरपूर व्यक्ति ही अपने जीवन में अन्य सद्गुणों का विकास सरलतापूर्वक कर सकता है इसमें भी संदेह नहीं। यदि हम चाहते हैं कि हम ऊर्जस्वित व कर्मशील बने रहें तथा मनसा वाचा कर्मणा संतुलित बने रहें व हमारी करनी और कथनी में अंतर न हो तो हमें कम व केवल उचित सोच-विचार करने के उपरांत ही बोलना चाहिए। कम बोलने के साथ-साथ सार्थक व उपयोगी विषयों पर बोलना ही हमारे हित में होगा। हमारे बोलने या बातचीत करने का ढंग भी ठीक होना चाहिए। हमारी बातचीत में शालीनता व शिष्टता होनी चाहिए। हमारे अधिकांश संबंध बातचीत में असावधानी अर्थात् ज़्यादा बोलने, निरर्थक बोलने व बातचीत के दौरान किसी का दिल दुखाने के कारण ही बिगड़ते हैं अत: अप्रिय अथवा कटु संभाषण भी कदापि नहीं करना चाहिए।

-ए.डी. 106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034
मो. 09555622323 ,Email : srgupta54@yahoo.co.in

HAIL Dr. PUNAM SURI JI

A few years ago there arose a spark
destined to rid DAV off all dark.
It set the beginning of a flight
thus driving us towards the light.

The spark, honourable Dr. Punam Suri ji
shone with the Sun's bright fury.
He set everything fine
and made DAV shine.

The sun emitting rays of grace
he gifted DAV with a new face.
A man of great strength and will power
he accelerated blossoming of the DAV flower.

A staunch believer of Arya Samaj he is
made us disciples of the values of bliss.
Having realized the vitality of value-based education
he is paving way for a bright future of the nation.

He introduced the magazine DAV United
which stands for the innovative way he led.
He is a man of innovation
leading the DAV flock with elation.

He is bestowed with great skill
And hones every DAVian's stupendous skill.
FIVE fruitful years of joy and success
With ease was its faithful access.

The influence he has at present
is like a waxing crescent.
DAV is synonymous to his life
making our days free of strife.

He is a precious gift we bear
who treats us with eternal care.
Suri ji, for the sweet time through which we flew
we raise our hearts in gratitude and say 'Thank you'!

- Aditya Narayanan. M Std. X-C, D.A.V Public School, Velachery, Chennai- 42

त्याग

❒ नरेन्द्र आहूजा विवेक

मनुष्य को जीवन में ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के समस्त धन ऐश्वर्य का त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए। यह ठीक है कि वेद भगवान मनुष्य को कर्म करते हुए जीवन को जीने की इच्छा करने का आदेश देते हैं और यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के द्वितीय मन्त्र **'कुर्वन्नैह वे कर्माणि....'** द्वारा मनुष्य को कर्मशील बनने की प्रेरणा दे दी है। वहीं **अकर्मा दस्यु** कहकर कर्महीन मानव को दस्यु की श्रेणी में डाला है। मनुष्य कर्म करते हुए धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति करे इसके लिए भी वेद में शतहस्त समाहार कहकर सौ हाथों से कमाने की प्रेरणा दी लेकिन साथ ही सहस्त्रहस्त संकिरः कहकर उस धन को हजारों हाथों से बांट देने का भी संदेश दिया।

जिस प्रकार स्वयं परमपिता परमेश्वर ने इस संपूर्ण सृष्टि का निर्माण त्यागपूर्वक किया है अपितु उस सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इस सृष्टि का निर्माण इस सृष्टि पर रहने वाले समस्त प्राणियों के उपयोग एवं उपभोग के लिए किया है और सृष्टि के निर्माण एवं पालन में ईश्वर का स्वयं का कोई स्वार्थ नहीं है यदि हम मनुष्य भी इससे प्रेरणा लेकर ईश्वर प्रदत्त धन ऐश्वर्य पर अपना अधिकार या आधिपत्य ना मान कर इसका त्याग पूर्वक भोग करे। तेन त्यक्तेन भुंजीथा यजु. 40 (1) द्वारा त्यागपूर्वक भोग करने का आदेश दिया है। वैसे भी लौकिक व्यवहार में हम देखते हैं कि किसी भी धनी व्यक्ति से कहीं अधिक सम्मान धनी व्यक्ति का होता है क्योंकि वह दान देकर अपने द्वारा अर्जित धन संपदा का त्याग कर रहा है और उसके दान से उपकृत समाज उसकी त्याग भावना का सम्मान करता है। वैसे भी संग्रह करने का लोभ या लालच एक ऐसी प्रवृति है जो लोभी को उसके विनाश की ओर ले जाती है। लोभ या लालच बुरी बला है मनुष्य बूढ़ा हो जाता है पर उसका लोभ लालच या इच्छायें कभी बूढ़ी नहीं होती। लोभ बुराइयों के उस परिवार का पिता है जो मनुष्य के जीवन को सर्वनाश की ओर ले जाता है। महाभारत में कहा गया है कि लोभ से क्रोध काम मोह माया अहंकार उद्दंडता और अंत में पराधीनता उत्पन्न होती है। लोभ का एकमात्र इलाज त्याग है। यदि मनुष्य के जीवन में त्याग की प्रवृति पैदा हो जाये तो मनुष्य लोभ लालच के मोह से छूट कर उन्नति के शिखर की ओर बढ़ सकता है।

त्याग भावना से किए गए दान से सभी प्राणी यहां तक कि पराये शत्रु भी वश में हो जाते हैं। त्यागपूर्वक दान से आपकी जेब चाहे खाली होती हो पर मन संतोष के भाव से भर जाता है। त्याग पूर्वक किया गया दान तो आप द्वारा बैंक में जमा करवाए गए धन के समान है जो किसी मुसीबत के समय पर आपके काम आता है। क्योंकि निश्चित रूप व्यवस्था के आधीन आपको अच्छी नियति या प्रारब्ध प्रदान करते हैं। इसलिए यदि हम अपना भविष्य बनाना चाहते हैं तो त्याग करते हुए दान जैसे सद्कर्मो से अपना प्रारब्ध स्वयं बना सकते हैं। वैसे भी पुरुषार्थ को प्रारब्ध वा नियति का जनक कहा गया है।

मनुष्य के जीवन में समस्त बुराईयों की जड़ लोभ लालच या संग्रह की प्रवृति है। ईश्वर प्रदत्त ऐश्वर्य को जब हम अपना समझकर उस अपना झूठा अधिकार समझते हैं तो यह स्वामित्व की भावना उसके छूटने पर हमें कष्ट देती है। लोभ वा लालच की प्रवृति के कारण हम दुष्कर्मो में प्रवृत होकर अपने लिए दुःखों को जन्म देते हैं। वैसे भी वेद भगवान ने मा गृधः। कहकर लालच ना करने का आदेश दिया है। जिस प्रकार यज्ञरूप प्रभु ने संपूर्ण सृष्टि का निर्माण किया और पालन कर रहा है ठीक उसी प्रकार हमें भी जीवन में यज्ञशेष ग्रहण करना चाहिए अर्थात् अग्ने नय सुपथा राये।। अर्थात् सुपथ से धन ऐश्वर्य कमाते हुए उसे परोपकार में लगाकर अर्थात् यज्ञीय कार्यो में उसका उपयोग करके शेष धन का उपभोग यज्ञशेष की भांति त्यागपूर्वक करना चाहिए। ऋग्वेद में ईश्वर ने स्पष्ट आदेश दिया केवलाघो भवति केवलादि।। अर्थात् अकेला खाने वाला पाप खाता है। धर्म के लक्षणों में भी संग्रह ना करके त्याग करने पर बल दिया गया है।

– 502, जी.एच. 27, सैक्टर-20, पंचकूला

વેદમાં આધુનિક વિજ્ઞાન

મૂળ હિન્દીમાં લેખક:- ડૉ. વિક્રમ કુમાર 'વિવેકી' 'પરોપકારી પત્રિકાના ડીસેમ્બર ૨૦૧૭ - પ્રથમમાંથી સાભાર'

અનુવાદક:- રામમહેતા

આજે સમાચારો અને ભાષણોનું આખીય દુનિયામાં જીવંત પ્રસારણ, વિવિધ રમત-ગમતોનું જીવંત પ્રસારણ મેદાનો કરતા પણ વધારે સુવિધાજનક અને સટીક રીતે જોઈ શકીએ છીએ. વિવિધ યુદ્ધો, વર્ગોમાં અપાતા પ્રવચનો, પૃથિવી, ગ્રહ-નક્ષત્રો, અનન્ત આકાશ અને સમુદ્રના તળીયે ઘટતી ઘટનાઓનું યથાર્થ દર્શન, શ્રવણ આપણા બેડરૂમમાં બેઠા બેઠા જ કરી લઈએ છીએ. આ કઈ રીતે શકય? આ એક યક્ષ પ્રશ્ન છે. પરંતુ એનો ઉત્તર વૈજ્ઞાનિક છે અને આ ઉત્તર ઋગ્વેદના પ્રથમ મંત્રમાં છે. પાઠકો વાંચીને ચોંકી ગયા હશે.

વેદ શબ્દનો અર્થ છે 'જ્ઞાન'. ઋગ્વેદના પ્રથમ મંત્રમાં જ ઉપર્યુકત વિજ્ઞાનની સૂક્ષ્મ ચર્ચા છે. મન્ત્ર છે - **'અગ્નિમીળે પુરોહિતં યજ્ઞસ્ય દેવમૃત્વિજમ્। હોતારં રત્નધાતમમ્॥'** આ મન્ત્રમાં નાનકડું વાકય છે - 'અગ્નિમ્ ઈડે', અર્થ છે – હું અગ્નિની સ્તુતિ કરું છું.. બાકીના પાંચ શબ્દો અગ્નિના પાંચ વિશેષણ છે.

અગ્નિ શું છે, કેવો છે, કયો છે, કયાં છે, એનું સ્વરૂપ અને સ્વભાવ કેવા છે? આદિ અનેક પ્રશ્નોનું સમાધાન મન્ત્રના વિશેષણોમાં તથા પછીના બીજા આઠ મંન્ત્રોમાં અનેક સ્થળે આપ્યું છે. વૈદિક વાંગ્મયમાં અગ્નિના મુખ્ય ત્રણ સ્વરૂપ કહેવામાં આવ્યા છે. – ૧ સૂર્યાગ્નિ, ૨ વિદ્યુદગ્નિ, અને ૩ પાર્થિવાગ્નિ. અગ્નિ શબ્દના ઘણા બધા અર્થ થાય છે જે સ્વામી દયાનન્દ સરસ્વતી કૃત વેદભાષ્યમાં જોઈ શકાય છે. જેમ કે – ઈશ્વર, અધ્યાપક, નાયક આદિ, પરન્તુ અહિં વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં માત્ર અગ્નિ અર્થનો જ સંબંધ છે. ઉપર્યુકત ત્રણે અગ્નિ ભૌતિક અગ્નિ જ છે. પંચ મહાભૂતોમાં જે અગ્નિ નામક ભૂત-તત્ત્વ છે એના જ આ ત્રણ સ્વરૂપ છે. આકાશ, વાયુ, અગ્નિ, જળ અને પૃથિવી નામના પંચ મહાભૂતોથી તો પાઠકગણ સુપરિચિત છે. પાથિવાગ્નિ તો એ છે જે રસોઈઘર આદિમાં પ્રજ્વલિત થઈને આપણી સેવા કરે છે. સૂર્યાગ્નિ વિના સૃષ્ટિની પરિકલ્પના થઈ ન સકે. વિદ્યુદગ્નિ આ બધામાં અદ્દભૂત છે જે ઉપર્યુકત સમગ્ર વિજ્ઞાનનું આધાર-તત્ત્વ છે.

કૉમ્પ્યૂટર કે મોબાઈલ આદિમાં બે મુખ્ય તત્ત્વ છે હાર્ડવેર અને સૉફ્ટવેર. હાર્ડવેર સ્થૂળ હોય છે જે દેખાય છે, સૉફ્ટવેર અદ્દશ્ય હોય છે. વિદ્યુતઅગ્નિ કરંટના રૂપમાં અદ્દશ્ય જ હોય છે. આજ મુખ્ય સૉફ્ટવેર છે, જેના વિના કોઈ પણ વિજ્ઞાનનો આવિર્ભાવ અસંભવ છે. વિદ્યુતની ગતિ વિસ્મયજનક છે. એના જ કારણે મોબાઈલ, કૉમ્પ્યુટર આદિ સક્રિય થઈને વાસ્તવિક પરિણામ આપી શકે છે. વિદ્યુત ન હોય તો આ બધા પાથિવ નિષ્ક્રિય તત્ત્વ જ હોય છે. એક જ ઘરમાં બેઠેલા બે જણ મોબાઈલમાં પરસ્પર વાતો કરે છે ત્યારે એમનું પરસ્પરનું અંતર તો એક રૂમથી બીજા રૂમ વચ્ચેનું જ હોય છે, પરંતુ કેટલું મોટું વૈજ્ઞાનિક સત્ય છે કે એમના વાર્તાલાપનો ધ્વનિ હજારો કિલોમિટર દૂર સ્થાપિત ઉપગ્રહના માધ્યમથી હજારો કિલોમિટરની તેજ ગતિથી વિદ્યુતઅગ્નિ (સ્પેકટ્રમ)ના માધ્યમથી એક – બીજા સુધી સ્પષ્ટ રૂપે પહોંચી રહી હોય છે. વિદ્યુત ન હોય તો આ બધું નિરર્થક છે.

ઈસરોએ ૨૦૧૭ના ફેબ્રુઆરીમાં એક સાથે ૧૦૪ ઉપગ્રહ તરતા મૂકવાનો રેકૉર્ડ બનાવ્યા. એમાં ભારતનો જે ઉપગ્રહ છે એ સરહદ અને પાડોશી દેશો પર નજર રાખે છે. આ ઉપગ્રહ ૫૦૦ કિલોમિટરની ઊંચાઈ ઉપરથી પડોશી દેશોની યુદ્ધ ટેન્કોની ગણત્રી પણ કરી શકે છે. સર્જિકલ સ્ટ્રાઈકનું પ્રસારણ કંટ્રોલરૂમ સુધી આ ઉપગ્રહ દ્વારા જ પહોંચતું હતું. આ ઉપગ્રહોનું કામ પુરુ થયા પછી પણ પોતાની કક્ષામાં ૩૦ હજાર કિલોમીટર પ્રતિ સૈકન્ડની ગતિથી ફર્યા કરશે. પાઠકગણ જરા વિદ્યુત ગતિની કલ્પના તો કરી જુઓ. સ્પષ્ટ છે કે ઉપગ્રહોનું પ્રક્ષેપણ કરવું, એને વાંછિત ઊંચાઈ પર કક્ષામાં સ્થાપિત કરવા, નિયંત્રિત કરવા, એમની પાસેથી મળેલ મહત્ત્વપૂર્ણ જાણકારીનો યોગ્ય ઉપયોગ કરવો એક જટિલ ટેકનોલૉજીનું પરિણામ છે. એવા રડાર બનાવવામાં આવ્યા છે કે જે ૩૦ સેન્ટીમિટર જેટલી નાનકડી વસ્તુને હજારો કિલોમિટર દૂરથી જ શોધી કાઢે છે. દૂરસંવેદી ઉપગ્રહોની મદદથી ધરતીની અંદર છુપાયેલા ખનિજ ભંડારોને પણ શોધી શકાય છે. આ બધું કઈ રીતે શકય બન્યું છે? સૂર્ય, પૃથિવી અને બીજા ગ્રહ – નક્ષત્રોના આકાર અને પરસ્પરની દૂરીની ચોકકસ જાણકારી કઈ રીતે મળી શકે? વિમાનોની ગતિ, ગતિ પર નિયંત્રણ, શારીરિક અને બાહ્ય સમસ્ત યંત્રોનું સંચાલન, સમગ્ર બ્રહ્માંડની સમસ્ત ગતિવિધિઓ – આ બધું આજ અગ્નિ વિદ્યા પર જ આધારિત છે. એટલે જ ઋગ્વેદના મન્ત્રમાં પહેલું વિશેષણ કહ્યું છે 'પુરોહિતમ્' અર્થાત્ જે અગ્નિના રૂપમાં, આકર્ષણ શકિતના રૂપમાં વિદ્યમાન છે. 'પુરોહિત' શબ્દનો અર્થ માત્ર મન્દિરના પૂજારી કે પંડિત ન હોઈ શકે. પંડિતને પણ પૂજારી એટલા માટે કહે છે કે એને આપણા આગેવાન (અગ્રણી) માનવામાં આવે છે.

અગ્નિ અગ્રણી છે. નિરુકતકાર યાસ્કે પણ લખ્યું છે – "અગ્નિરગ્રણિર્ભવતિ, પુર: એનં દધતિ" અર્થાત્ અગ્નિ અગ્રણી એટલા માટે છે કે એ સહુથી આગળ હોય છે. 'પુરોહિત' એટલે કહેવાય છે કે એ સહુને આગળ રાખે છે, વિજ્ઞાન આ અગ્નિ તત્ત્વ વિના પાંગળુ છે. વિચાર કરો જરા અગ્નિ વના જીવન કેટલું દુર્ભર બની જાય.

આ અગ્નિ 'યજ્ઞસ્ય દેવમ્' પણ છે. યજ્ઞના દેવતા છે. યજ્ઞનું તાત્પર્ય માત્ર યજ્ઞકુંડના અગ્નિના અર્થમાં જ નથી. 'યજ્ઞો વૈ શ્રેષ્ઠતમં કર્મ' મુજબ પ્રત્યેક શ્રેષ્ઠ કર્મ યજ્ઞ છે અને આ અગ્નિ એ સમસ્ત શ્રેષ્ઠકર્મોના દેવ છે. 'દેવો દાનાદ્ વા દીપનાદ્ વા દ્યુસ્થાનો ભવતીતિ વા' (નિરુકત) ઘણું બધું આપનાર, પ્રકાશિત હોવાથી, અને દ્યુલોકમાં પણ એની સત્તા હોવાને કારણે અગ્નિ 'દેવ' કહેવાય છે. આ અગ્નિ ઋત્વિક પણ છે અર્થાત્

ઋતુઓની નિર્માતા પણ છે. એને 'હોતા' પણ કહી છે કારણ કે એ શિલ્પક્રિયાઓથી ઉત્પન્ન કરવા યોગ્ય પદાર્થોની દાતા છે. એને 'રત્નધાતમમ્' પણ કહે છે કારણ કે એ સારા સારા સુવર્ણ આદિ રત્નોના ધારક તત્ત્વ છે. સુવર્ણ અગ્નિનું જ રૂપાન્તરણ છે. અહીં એ કહેવું છે કે ઋગ્વેદના પ્રથમ મન્ત્ર અને પછીના અન્ય મન્ત્રો પર સ્વામી દયાનન્દે કરેલ ભાષ્યનો પાઠકો સ્વાધ્યાય કરે, એના પર ઉંડું ચિંતન મનન કરે. સ્વામીજી લખે છે – "યાસ્કમુનિએ સ્થૌલાષ્ઠીવિ ઋષિના મત પ્રમાણે 'અગ્નિ' શબ્દનો 'અગ્રણી' અર્થાત્ સહુથી ઉત્તમ અર્થ કર્યો છે અર્થાત બધા યજ્ઞોમાં જેનું સહું પહેલા પ્રતિપાદન થાય છે એ સહુથી ઉત્તમ જ હોય છે". એટલે અગ્નિ શબ્દનો ઈશ્વર તથા દાહગુણ વાળી 'ભૌતિક અગ્નિ' આ બંને અર્થોનું ગ્રહણ થાય છે."

ભૌતિક અર્થનો સ્વીકાર કરવાના પ્રમાણ જોઈએ – (વદશ્વ) ઇત્યાદિ શતપથ બ્રાહ્મણના પ્રમાણોથી અગ્નિ શબ્દનો અર્થ ભૌતક અગ્નિ બને છે. આ અગ્નિ બળદની જેમ બધા દેશ-દેશાન્તરોમાં પહોંચાડવા વાળો હોવાથી 'વૃપ' અને 'અશ્વ' પણ કહેવાય છે, કારણ કે એ કળાઓ દ્વારા 'અશ્વ' અર્થાત ઝડપથી ચાલવાવાળો હોવાથી શિલ્પવિદ્યાના જાણકારો વિમાન આદિ વાહનોને તીવ્ર ગતિથી દૂર દૂરના દેશોમાં પહોંચાડે છે. (અગ્નિમીળે) પરમાર્થ અને વ્યવહાર વિદ્યાની સિદ્ધિ માટે અગ્નિ શબ્દનો અર્થ પરમેશ્વર અને ભૌતિક અગ્નિ એ બંને થઈ શકે છે. પહેલાના સમયમાં આર્યજનોએ અશ્વવિદ્યા નામની ઝડપથી આવાગમન કરવા માટે શિલ્પવિદ્યાની શોધ કરી હતી એ 'અગ્નિવિદ્યા'ની જ ઉન્નતિ હતી. જાતે જ પ્રકાશમાન, બધાના પ્રકાશક અને અનન્ત જ્ઞાનવાન આદિ ગુણોને લઈને અગ્નિ શબ્દના પરમેશ્વર તથા રૂપ, દાહ, પ્રકાશ, વેગ, છેદન આદિ ગુણ અને શિલ્પવિદ્યાના મુખ્ય સાધક આદિના કારણે પ્રથમ મન્ત્રમાં ભૌતિક અર્થને ગ્રહણ કર્યો છે.

પછીના મન્ત્રમાં 'અગ્નિ' શબ્દને લઈને સ્વામીજીએ અધ્યાપક, વિદ્યાર્થી અને વૈજ્ઞાનિકોને પરામર્શ આપ્યો છે – એ (અગ્નિ) પરમેશ્વર (ઈડ્ય:) સ્તુતિ કરવા યોગ્ય અને આ ભૌતિક અગ્નિ સદાય સંશોધન કરવા યોગ્ય છે.

દાવા સાથે કહું છું કે જે સોફ્ટવેરની ટેકનોલૉજીથી દરરોજ નવી નવી શોધો સામે આવી રહી છે, બે–ચાર મહીનામાં નવી ટેકનોલૉજીને કારણે મોબાઈલ જુના પડી જાય છે, નવી ટેકનોલૉજીથી સજ્જિત નવા મોબાઈલ ઝડપથી સામે આવી રહ્યા છે, આ બધું અગ્નિ શબ્દની પ્રેકિટકલ વ્યાખ્યા જ છે. સાયંસને ઋગ્વેદના પ્રથમ મન્ત્રની કોમેન્ટ્રી માનવી પડે છે અને આ વૈજ્ઞાનિકોને પણ ઋષિ –કલ્પ માનવા પડે છે, ઋષિપુત્ર કહેવા પડે છે."

"અને જે સર્વજ્ઞ પરમેશ્વરે ત્રિકાલસ્થ ઋષિઓને મન્ત્રમાં પરમાર્થ અને વ્યવહારની બે વિદ્યા કહી છે, એનાથી એમાં ભૂત કે ભવિષ્યકાળની વાત કહેવામાં કોઈ પણ દોષ નથી થતો, કારણકે વેદ સર્વજ્ઞ પરમેશ્વરના વચન છે. એ પરમેશ્વર ઉત્તમ ગુણોને તથા ભૌતિક અગ્નિ વ્યવહાર કાર્યોમાં પણ સંયુકત કરેલા ઉત્તમોત્તમ ભોગના પદાર્થોને આપવા વાળા છે. જુનાની તુલનામાં એક પદાર્થ કરતા બીજો નવો અને નવાની તુલનામાં પહેલો જુનો હોય છે.

આજ અર્થ આ મન્ત્રના નિરુકતકારે પણ કર્યો છે કે અજ્ઞાની લોકોએ પ્રસિદ્ધ ભૌતિક અગ્નિનો ઉપયોગ રસોઈ બનાવવા આદિ કાર્યોમાં કર્યો છે, એ અર્થ આ મન્ત્રમાં નથી કરવાનો, પરંતુ બધાને પ્રકાશના આપવાવાળા પરમેશ્વર અને બધી વિદ્યાઓનું કારણ જેનું નામ વિદ્યુત છે, એજ ભૌતિક અગ્નિ શબ્દનો કર્યો છે."

વેદમાં 'અશ્વિનૌ' શબ્દની ચર્ચા પણ અનેકાનેક સ્થળે જોવા મળે છે. મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી 'અશ્વિનૌ' શબ્દની અદ્‌ભૂત વ્યાખ્યા કરે છે. નિરુકત આદિના પ્રમાણોથી તથા 'યોગજ-બુદ્ધિ'થી વિજ્ઞાન સાથે સમ્બન્ધિત અનેક રહસ્યોને ખોલે છે. ઋગ્વેદાદિભાષ્ય ભૂમિકાના 'નૌકાવિમાનાદિ વિષય' પ્રકરણમાં તેઓ લખે છે –"વાયુ અને અગ્નિ આદિના નામ 'અશ્વિ' છે કારણકે બધા પદાર્થોમાં 'ધનંજય'ના રૂપમાં વાયુ અને 'વિદ્યુત'ના રૂપમાં અગ્નિ – બંને વ્યાપ્ત છે તથા જળ અને અગ્નિના નામ પણ 'અશ્વિ' છે કારણ કે અગ્નિ જ્યોતિથી યુકત અને જળ રસથી યુકત થઈને વ્યાપ્ત થઈ રહ્યા છે. 'અશ્વૈ' અર્થાત એ વેગાદિ ગુણોથી યુકત છે. જે પુરુષોને વિમાનાદિની યાત્રાની ઇચ્છા હોય , તેઓ વાયુ, અગ્નિ અને જળથી એને સિદ્ધ કરે".

અશ્વિ અર્થાત અગ્નિ અને જળ છે, એના સંયોગથી વરાળરૂપી અશ્વ અત્યન્ત ગતિ આપવાવાળા હોય છે. એને જેટલી વધારવી હોય એટલી વધારી શકાય છે. જે વાહનોમાં બેસીને સમુદ્ર અને અન્તરિક્ષમાં નિરન્તર સ્વસ્તિ અર્થાત સદાય સુખ આપે છે કે જે વાયુ, અગ્નિ અને જળ આદથી ગતિ મળે છે, એને મનુષ્યો સુવિચાર પૂર્વક ગ્રહણ કરે. આ સામર્થ્ય પૂર્વોકત અશ્વિસંયુકત પદાર્થોમાં જ છે. બધા કારીગર લોકોએ આવા વાહનો બનાવવાની કળા જાણવી જોઈએ. જે વાહનો દ્વારા ત્રણ દિવસ અને ત્રણ રાતમાં દ્વીપ – દ્વીપાન્તરમાં જઈ શકાય. હે મનુષ્યો! (મનોજુવ:) અર્થાત જેવી રીતે મનની ગતિ છે, એવી રીતે ગતિમાન વાહનો બનાવો. એ વાહનોમાં (મરુત્) અર્થાત વાયુ અને અગ્નિને મનોવેગની જેમ ચલાવો."

આજે જે ચંદ્રયાન, મંગળયાન આદિ શીઘ્રગામી તથા યુદ્ધક્ષેત્ર સાથે સમ્બન્ધિત વિવિધ દ્રોણ, ટેંક, સ્ટીમર તથા અનેક વિસ્મયજનક આયુધોનું નિર્માણ થયું છે એ બધું અગ્નિ સમ્બન્ધિત વિદ્યાને કારણે જ છે. અગ્નિમાં પ્રકાશ છે, જ્વલનશકિત છે, દ્રુતગતિ છે, વિદ્યુતરૂપી ઊર્જા છે. પ્રકાશની તીવ્રતમ ગતિથી આપણે સુપરિચિત છીએ . એટલે ડેસ્કટૉપ, લેપટૉપ, પામટૉપ અને દરેક હાથમાં હજર મોબાઈલે જે અદ્‌ભૂત ક્રાન્તિ સર્જી છે, એમાં આજ અગ્નિવિદ્યા છે એકમાત્ર વિચિત્ર વિદ્યુદ્વિદ્યા છે. વર્તમાનપત્ર, પુસ્તકો, માસિક પત્રિકાઓ અને ટી. વી. ના સ્થાને આજે ન્યૂજ મીડિયા, સોશિયલ મીડિયા, વ્હોટ્સએપ, ફેસબુક, મેસેન્જર, યૂ ટ્યૂબ, ટ્વીટર આદિની જે બોલબાલા છે એ બધું આ વિદ્યુતનો જ ચમત્કાર છે. અને આ ચમત્કારને નમસ્કાર છે.

"અગ્નિમ્ ઈળે પુરોહિતમ્".

समाचार दर्पण

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या, गुरुकुल, लुधियाना

गुरु पूर्णिमा पर्व आयोजित

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या, गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना में गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजेन्द्र पाल जी स्याल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्रीमती सतवनत कौर जी भुल्लर (प्रिं डी.ए.वी. स्कूल पक्खोवाल रोड, लुधियाना) पधारी। श्री सुरेश जी मुंजाल, श्रीमती रमा जी मुंजाल, श्री अशोक जी सूद, श्री पुरुषोत्तम जी महाजन, श्री गौतम जी, श्री विजय जी स्याल, प्रिं. श्री गुलेरिया जी, श्री व्यास जी बैम्बी, श्री अतुल जी मेहता, श्री विजय जी गुलाटी, डॉ. श्रीमती सुमन जी शारदा, श्रीमती अरूणा जी अप्लिश, श्रीमती स्वराज जी महता, एवं अन्य गणमान्य आर्य बन्धओं ने अध्यक्ष जी तथा मुख्य अतिथि जी का पुष्पमालाओं से तथा ब्रह्मचारिणियों ने गुलदस्तें भेंट कर स्वागत किया।

गुरुकुल के मैनेजर प्रिं श्री मोहन लाल जी कालड़ा ने गुरु पूर्णिमा में कहा कि यह पर्व शिष्यों के द्वारा गुरु के प्रति सम्मान प्रकट करने का पर्व है। उन्होंने गुरुकुल के विषय में बताया कि यह गुरुकुल आधुनिक शिक्षा व प्राचीन विद्या का समन्वय हैं।

मंच संचालन दसवीं कक्षा की ब्र. वंदना और सृष्टि ने किया। ब्रह्मचारिणियों ने समस्त अध्यापिकाओं को पुष्पमालाओं से सम्मानित किया। ब्रह्मचारिणियों ने भाषण, भजन व गीतों द्वारा सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्या श्रीमती शोभना जी ने गुरु से होता है जीवन शुरु के विषय में विचार व्यक्त किए।

अध्यक्ष जी ने कहा कि हम हर वर्ष गुरु पूर्णिमा मनाते हैं। इसका उद्देश्य है कि हम जो सुने उसके आचरण करें तो जीवन जीना सफल हो जाएगा। उन्होंने ब्रह्मचारिणियों को कहा कि यहाँ से जाने के बाद यहाँ से प्रापत ज्ञान व संस्कारों का आगे प्रचार करें। प्रधानाचार्या जी ने अध्यक्ष जी का धन्यवाद किया तथा श्री सुरेश जी मुंजाल, कुलपति श्री मंगत राम जी मेहता, श्री मोहन लाल कालड़ा ने स्मृति चिन्ह् भेंद कर उनको सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि जी ने सुझाव दिया कि आर्य समाज द्वारा मैरिटोरियस स्कूल खोला जाए। श्री विजय जी स्याल ने इस सुझाव को कार्यरूप देने का विश्वास दिलाया। गुरुकुल की अधिष्ठात्री डॉ. सुमन जी शारदा ने सबका धन्यवाद किया। समापन से पूर्व शांति गीत किया गया।

सत्यानंद मुंजाल चैरिटेबल डिस्पेंसरी का शुभारंभ

डी.ए.वी. के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं हीरो ग्रुप के को-फाउंडर स्वर्गीय महात्मा सत्यानंद जी मुंजाल की पुण्य स्मृति में मुंजाल परिवार ने उनके लुधियाना निवास स्थान पर सत्यानंद मुंजाल चैरिटेबल डिस्पेंसरी का शुभारंभ किया। इस शुभ कार्य की शुरुआत उनके सुपुत्र श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्री उमेश मुंजाल और श्री महेश मुंजाल ने हवन माध्यम से की। श्री योगेश मुंजाल जी ने इस मौके पर बताया की श्री सत्यानंद जी जब भी समाज कल्याण के बारे में सोचते थे तो शिक्षा और स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा अहमियत देते थे। शिक्षा के प्रसार के लिए पहले ही उनके बनाए शिक्षण संस्थान बहुत अच्छे से काम कर रहे हैं, इसलिए अब उनके नाम से परिवारजन चिकित्सा के क्षेत्र में लुधियाना वासियों को लाभान्वित करना चाहते हैं। दयानंद मेडिकल कॉलेज के सेक्रेटरी श्री प्रेम गुप्ता ने इस चैरिटेबल क्लीनिक का उदघाटन किया और कहा कि महात्मा जी हमेशा उनके लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इस क्लीनिक में जनरल ओपीडी के इलावा हर प्रकार के टेस्ट जरूरतमंद लोगों के लिए कम दरों पर किए जाएंगे। इसके इलावा फ्री दवाइयों का प्रावधान भी किया गया है। डॉ रजनीश त्यागी ने बताया कि इस क्लीनिक से इलाका वासियों को बहुत लाभ पहुंचेगा। इस दौरान रमा मुंजाल, उर्मिल मुंजाल, रेनू मुंजाल, विजय मुंजाल, रेखा मुंजाल, आर्य समाज मॉडल टाउन के प्रधान राजेंद्र, हीरो साइकिल के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर एस के राय, एवन साइकिल के ओंकार लसह पाहवा, नोवा साइकिल के हरमोहिंदर सिंह पाहवा, डॉक्टर जी.एस वंडर, डॉ अश्विनी चौधरी व नोबेल फाउंडेशन के चेयरमैन राजेंद्र शर्मा आदि उपस्थित थे।

के.एल. मेहता विद्यार्थी अवार्ड-दिवस आयोजित

'महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान के के.एल. मेहता फरीदाबाद (हरियाणा) दयानन्द विद्यालयों ने अपने संस्थापक अध्यक्ष महात्मा कन्हैया लाल महता का जन्मदिवस 'विद्यार्थी अवार्ड दिवस' के रूप में अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाया। इस समारोह में विद्यार्थियों ने नमन और आभार प्रकट करते हुए उस महान शिक्षाविद् महात्मा कन्हैया लाल महता जी के प्रति गीत प्रस्तुत किए। समारोह की मुख्यअतिथि श्रीमती सीमा, त्रिखा, विधायक फरीदाबाद ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'यह संस्थान उनके लिए 'मंदिर की तरह है और यहां के विद्यालय और महाविद्यालय शहर के लिए वरदान हैं, जहां आदर्श फीस व्यवस्था आज भी है। श्री ए.सी. चौधरी ने अपने भावों में महात्मा कन्हैया लाल महता जी को 'चिरंतन साधु' और 'युग पुरुष' की संज्ञा दी। सभी का स्वागत संस्थान की अध्यक्षता डॉ. विमल महता ने तथा संस्थान की प्रबंधक समिति के वरिष्ठ सदस्यों ने किया। मुख्य अतिथि ने सी.बी.एस.ई. एवं हरियाणा बोर्ड की दसवीं के उन विद्यार्थियों को सम्मानित किया जिन्होंने इस संस्थान के अंतविद्यालयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त किया। इस वर्ष सी.बी.एस.ई की दसवीं परीक्षा का स्वर्ण पदक के.एल. महता दयानन्द पब्लिक सी.से. स्कूल नेहरू ग्राउण्ड के विद्यार्थी सुश्री ईशा नागपाल को मिला तथा हरियाणा बोर्ड में के.एल. महता दयानन्द स्कूल, 5ई/55 के विद्यार्थी सुश्री संजना को मिला। अपने-अपने विद्यालयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त किया। इस वर्ष सी.बी.एस.ई. की दसवीं परीक्षा का स्वर्ण पदक के.एल. महता दयानन्द पब्लिक सी.से. स्कूल नेहरू ग्राउण्ड के विद्यार्थी सुश्री ईशा नागपाल को मिला तथा हरियाणा बोर्ड में के.एल. महता दयानन्द स्कूल, 5 ई/55 के विद्यार्थी सुश्री संजना संजना को मिला। अपने-अपने विद्यालयों में सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थी को दो वर्ष की निःशुल्क ट्यूशन फीस का सार्टिफिकेट दिया गया। उपाध्याय श्री आनन्द महता ने अतिथियों का आभार प्रकट किया। पूर्व मन्त्री श्री ए.सी. चौधरी एवं विभिन्न गुरुकुलों एवं आर्य समाजों के प्रतिनिधिटों ने उपस्थिति द्वारा मान बढ़ाया।

टंकारा बोधोत्सव 2019

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष 2019 में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्री के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार 03, 04, 05 मार्च 2019 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथिया अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। व्यवस्था करने हेतु अपने आने से पूर्व लिखित सूचना अवश्यक देवे, कितने ऋषिभक्त आ रहे हैं संख्या सहित सूचित करें।

– रामनाथ सहगल, मन्त्री

सादर आमंत्रित

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

दिनांक 6 से 8 अक्टूबर 2018

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में

- अनेक मान्य संन्यासीवृन्द, आर्यनेता, आर्यविद्वान् व विदुषियाँ आर्य श्रेष्ठिगण पधारेंगे व हमें प्रेरणा प्रदान करेंगे।
- सशक्त मंच सदैव से सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों की पहचान रही है।
- आपसे निवेदन है अधिक से अधिक संख्या में इस मनोरम विश्वप्रसिद्ध नगरी में पधारें और महर्षिवर देव दयानन्द की कर्मस्थली पर आर्यजगत् के पूज्य विद्वानों के सान्निध्य में अपने अन्दर नूतन ऊर्जा का संचार करें।
- कृपया अपना अर्थ सहयोग श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नाम चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट से भेजें। न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियत की धारा 80 जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

105वाँ वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज टमकोर (राजस्थान) के तत्वावधान में आयोजित दिनांक 04, 05, 06 सितम्बर 2018 को होने जा रहा है। इस उत्सव का उद्देश्य केवल अन्य धार्मिक संगठनों की तरह लोगों को संगीत का आनन्द प्रदान करना ही नहीं है बल्कि संगीत की सहायता से चरित्र निर्माण, सदाचार, प्राकृतिक व्यवहार व राष्ट्रप्रेम की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए समस्त विश्व को श्रेष्ठ बनाना, संसार की कुरीतियों व उनके निवारण की शिक्षा प्रदान करना, संसार में वास्तविक सुख कहाँ व कैसे मिल सकता है।

चतुर्वेद यज्ञ आयोजित

धौलपुर आर्य सत्याग्रह शताब्दी समारोह चतुर्वेद यज्ञ एवं वैदिक सत्संग में आयोजित। 17 से 19 अगस्त 2018 **अशोक विजय कॉम्पलेक्स हरदेव नगर, धौलपुर** में चतुर्वेद यज्ञ एवं वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु, अबोहर (पंजाब), डॉ. वेदपाल जी, मेरठ, श्री ओममुनि जी मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर, आचार्य ओमप्रकाश जी गुरुकुल आबूपर्वत, आचार्य देवराज शास्त्री, श्री विजय सिंह जी भाटी, माताश्री ज्योत्स्ना, अजमेर, श्री मानिकचन्द जी भजनोपदेशक, श्री रामनिवास जी गुणग्राहक को आमंत्रित किया गया।

श्रावणी पर्व एवं वेद सप्ताह आयोजित

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल (हरियाणा) के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, रक्षा बन्धन रविवार 26 अगस्त 2018 से भाद्रपद श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सोमवार 03 सितम्बर 2018 तक करनाल नगर में उत्साह के साथ मनाया गया। आयोजन के विशेष आकर्षण यज्ञ, भजन एवं वेद प्रवचन थे। मुख्य वक्ता: आचार्य जयेन्द्र जी (गुरुकुल, नोएडा), भजनोपदेशक: पं. भानु प्रकाश शास्त्री (बरेली), वेद पाठ: पं. राजीव आर्य (पुरोहित, आर्य समाज मन्दिर, दयालपुरा, करनाल) के थे।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव आयोजित

आर्य समाज मन्दिर, कमालगंज, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश) में आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री की अध्यक्षता में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुपसिद्ध विद्वान् भजनोपदेशक, साधु, सन्यासी जन पधारे। यज्ञ प्रातः 9 से 11 बजे तक गुरु पूर्णिमा महोत्सव एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

शिविर आयोजित

आर्य समाज भरूवा सुमेरपुर के अन्तर्गत सार्वदेशिक आर्यवीर दल का शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन ओ३म् ध्वज फहराकर तथा दीप प्रज्जवलित कर किया गया मुख्य अतिथि कानपुर आर्योपप्रतिनिधि सभा के प्रधान अशोक आनन्द एवं अशोक पुरी, श्री चन्द्र आर्य औंग जिला-फतेहपुर ने संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। उद्घाटन में मुख्य वक्ता डॉ. सत्यकाम आर्य एवं विशिष्ट वक्ता आनन्द जी आर्यमन्त्री कानपुर जिला-आर्योपप्रतिनिधि सभा थे। अध्यक्षता सुमेरपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष श्री आनन्दी प्रसाद पालीवाल जी ने की। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती का सानिध्य प्राप्त रहा। कुशल प्रशिक्षकों ने शारीरिक व्यायाम आदि का प्रशिक्षण दिया। वैदिक धर्म कि जय आदि नारे लगाते चल रहे थे आर्य वीरों कि टोलियाँ अपने वर्ग नायक के पीछे चल रही थी। महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द प. लेखराम कि जय आदि नारे लगाते ल रहे थे।

श्रीमती कमलेश महाजन दिवंगत

आदरणीय श्रीमती कमलेश महाजन जी धर्मपत्नी डॉ. सोमदत्त महाजन **(आर्य समाज सूरजमल विहार, नई दिल्ली)** का अकस्मात ही इस जीवनयात्रा को पूर्ण करके अनन्त की यात्रा में विलीन हो गई। पूज्या माता जी का जीवन करूणा, दया, उदारता आदि शुभगुणों से सुगन्धित, सुरभित, सुपूरित था। वो हमेशा प्राणिमात्र के कल्याण सुख शान्ति और समृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहती थी। पति की शुभ प्रेरणा से उन्होंने बहुत वर्षों तक आर्यसमाज सूरजमल विहार में नि:शुल्क योग कक्षाओं को बड़े ही समर्पित भाव से संचालन निष्पादित किया।

भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन की हर घटना को हम ईश्वर और स्वयं के कर्मों की व्यवस्था मानते है। इसी ईश्वरीय व्यवस्था को स्वीकारते हुए हम सब दिवंगत आत्मा की सदगति और शांति की प्रार्थना करते है और परिवारीजनों के लिए धीरज की कामना करते है। अपने पीछे वो भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

टंकारा परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

दयानन्द मठ चम्बा का 28वां वार्षिकोत्सव

7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2018 तक मठ का वार्षिक उत्सव मनाया जाएगा, जिसमें प्रातः 6 बजे से 10 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे। महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्रों-छात्राओं द्वारा 11 बजे से 3.30 बजे तक प्रस्तुत की जाएंगी।

सायं-4 से 7 बजे तक पुनः यज्ञ व भजन प्रवचन। यह क्रम 9 अक्टूबर 2018 तक चलेगा।

दयानन्द मठ चम्बा, भारतीय स्टेट बैंक चम्बा **खाता न. 11149833806 IFSC NO-SBIN0000626, CIF No-80932484893** खाते में राशि जमा करने के बाद-09805022871 अथवा 01899-222871 इन नम्बरों में से किसी एक पर सूचना अवश्य दे दें ताकि रसीद भेजने में आसानी रहेगी।

युवा चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्यवीर दल, हरियाणा के नेतृत्व में आर्यवीर दल, सोनीपत की ओर से स्थानीय डी.ए.वी. स्कूल सैक्टर-15, सोनीपत में युवा चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। आठ दिवसीय आवासीय शिविर में संदीप जी की अध्यक्षता में मुख्य व्यायाम शिक्षक श्री शैलकुमार जी ने शिविरार्थियों को प्रशिक्षण दिया। शिविरार्थियों ने कई प्रकार के आसन, व्यायाम, लाठी चलाने की विद्या के अतिरिक्त मानवपुल, स्तूप, पिरामिड्स आदि निर्माण की कला का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। ईश्वर, धर्म, ब्रह्मयज्ञ-संन्ध्या, अग्निहोत्र (यज्ञ) आदि के विषय में प्रशिक्षण दिया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्री विवेक मित्तल जी, श्री आनन्द स्वरूव (गुरुग्राम), डॉ. कमलेश्श मलिक, श्रीमती राजगुलाटी, श्री रवीन्द्र आर्य, श्री प्रवीण आर्य, श्री वेदप्रकाश आर्य (महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा आदि ने शिविरार्थियों का समुचित मार्गदर्शन किया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज, गोरखपुर, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

प्रधान- श्री प्रकाश चन्द्र सोनी **मन्त्री**- श्री अनूप गायकवाड़

कोषाध्यक्ष- श्री वेदामृत गारी

आर्य समाज, कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1

प्रधान- श्री विजय लखनपाल **मन्त्री**- श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा

कोषाध्यक्ष- श्री अमर सिंह पहल

आर्य समाज, बाछौद

प्रधान- श्री बिरेन्द्र सिंह आर्य **मन्त्री**- श्री मनोज कुमार

कोषाध्यक्ष- श्री जगदीश चौहान खजांची

॥ माँ वेद स्तुति ॥

ओ३म् स्तुता मया वरदावेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशूं कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसं। मह्यं दत्वा ब्रजत-ब्रह्मलोकं स्वाहा॥ अथर्व 19/71/1

काव्यार्थ-स्तुति करते हम वेद ज्ञानकी, जो माता है प्रेरक पालक-पावन करती मनुज मात्रको। आयु, बल, संतति, पशु, कीर्ति, धन मेधा विद्या का दान। सबकुछ देकर हमे दिया है, मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान॥

(पृष्ठ 1 का शेष)

उन दिनों अत्याचारी कंस का राज्य था जिसने श्रीकृष्ण जी को पैदा होते ही मरवाने का षडयन्त्र रच रखा था क्योंकि उसके मन में इस बात का भय गहराई से बैठ गया था कि देवकी के आठवें गर्भ से जो सन्तान पैदा होगी वह कंस का नाश करेगी। इसलिए देवकी के गर्भ ठहरने का ज्यों ही उसे पता चलता था वह उस पर पूरी निगरानी रखता था तथा देवकी की संतान को पैदा होते ही मरवा दिया करता था। श्रीकृष्ण जी जब देवकी के गर्भ में थे तो उस समय भी कंस ने वसुदेव व देवकी को कारागार में डाल रखा था मगर पैदा होते ही नवजात शिशु श्रीकृष्ण जी को कंस की आंखों में धूल झोंककर जैसे-कैसे मथुरा से नन्द गोप के यहां गोकुल पहुंचा दिया गया तथा वहीं पर ही उनका पालन पोषण हुआ।

स्वयं उन्हीं के द्वारा की गई घोषण के अनुसार अधर्म का नाश करना और धर्म की स्थापना करना ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा। उन्हें गोकुल में सकुशल पहुंचा तो दिया गया था मगर कंस ने वहां पर भी उन्हें समाप्त कराने के प्रयास किए यह अलग बात है कि उसे इसमें सफलता नहीं मिली। युवावस्था तक पहुंचते-पहुंचते श्रीकृष्ण जी ने न केवल पूतना, वत्सासुर, बकासुर और अघासुर आदि का काम तमाम किया बल्कि जब वृन्दावन वासियों पर अतिवृष्टि का प्रकोप आया तो अपने साथियों के सहयोग से उन्होनें सात दिनों तक सबके ठहरने तथा भोजनादि की व्यवस्था गोवर्धन पर्वत पर करके अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया। श्रीकृष्ण तथा बलराज जी ने सान्दीपनी मुनिजी के गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण की थी। इधर कंस को निरन्तर श्रीकृष्ण जी द्वारा किए गए साहसिक कार्यों की सूचना मिलती रहती थी तथा वह उनके इन कार्यो से और अधिक भयभीत होता रहता था। अन्ततः उसने उन्हें समाप्त करने के लिए एक योजना के तहत धनुष-यज्ञ का आयोजन किया और उसमें श्रीकृष्ण व बलराम को भी आमन्त्रित किया। जब वे दोनों भाई वहां पहुंचे तो कंस ने उन्हें समाप्त करने के लिए महाबलशाली कुलवयापीड नामक हाथी को छोड़ा। श्रीकृष्ण जी ने देखते-देखते ही उसको मार गिराया तथा धनुष तोड़कर अपनी शक्ति का परिचय दिया। जब तो कंस बहुत अधिक घबरा गया तथा उसने चाणुर और मुष्टिक नाम के दो पहलवानों को उन्हें मारने के लिए छोड़ा। देखते ही देखते श्रीकृष्ण जी ने चाणूर का तथा बलराम जी ने मुष्टिक का काम तमाम कर दिया। उनको समाप्त करके श्रीकृष्ण जी ने कंस को जा पकड़ा तथ बलराम जी ने उसके भाई सुनामा को पकड़ लिया और द्वन्द्वयुद्ध में उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। कंस का ससुर जरासन्ध उन दिनों बहुत दुराचारी राजा था तथा उसने 86 राजाओं को अपनी कैद में बन्द कर रखा था। कंस की मृत्यु का समाचार सुनकर उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। एक नीति के तहत श्रीकृष्ण जी ने मथुरा छोड़ दी तथा द्वारिका चले गए मगर जरासंध को समाप्त करने का अवसर उन्हें उस समय मिला जब महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। उस समय भीमसेन ने द्वन्द्वयुद्ध में जरासन्ध को मार गिराया। द्वारिका निवास के समय बलराज जी का विवाह रैवतक राजा की पुत्री रेवती के साथ तथा श्रीकृष्ण जी का विवाह रूक्मणी के साथ सम्पन्न हुआ था। श्रीकृष्णजी ने युद्ध को रोकने का पूरा प्रयास किया मगर जब युद्ध अनिवार्य हो गया तो उन्होंने न केवल अर्जुन का मोह भंग करके उसे युद्ध के लिए तैयार किया बल्कि भीष्म, जयद्रथ, कर्ण, द्रोण तथा दुर्योधन को समाप्त करने में भी उनका ही मुख्य हाथ रहा है। श्रीकृष्ण जी के जीवन का लक्ष्य भले ही राजनैतिक एकता तथा सामाजिक समरसता स्थापित करना रहा हो मगर मुख्य रूप से वे आध्यात्मिक महापुरुष थे। ईश्वरोपासना उनके जीवन का अभिन्न अंग था। वैशम्पायन जी एक स्थान पर जनमेजय जी से कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण आधा पहर रात बीतने पर शैया त्याग कर उठ बैठते थे और ध्यान मार्ग में स्थित हो सत्य सनातन परमेश्वर का चिन्तन, स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना किया करते थे। परमात्मा के ध्यान के बाद दैनिक कर्म शौचादि से निवृत होकर स्नान करते थे और फिर जपने योग्य गायत्री मन्त्र का जप करके अग्निहोत्र किया करते थे। तत्पश्चात् चारों वेदों के विद्वानों को बुलाकर उनसे वेद मन्त्रों का पाठ एवं उपदेश करवाकर उन्हें गोदान किया करते थे। वे इतने अधिक आध्यात्मिक तथा प्रभु भक्त थे कि यात्रा के समय में भी वे सन्ध्योपासना आदि करना नहीं भूलते थे। इसके उनके जीवन में कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक बार जब वे हस्तिनापुर जा रहे थे तो उन्होंने ऋषियों के आश्रम में विश्राम किया। अगले दिन प्रातः काल भी उन्होंने सन्ध्यावन्दन तथा अग्निहोत्र किया था। वास्तव में श्री कृष्ण जी महाराज एक विलक्षण योद्धा, नीतिवान, धर्मात्मा, योगी, सदाचारी, परोपकारी, निर्भीक, निर्लोभी, शालीन और विनम्र तथा मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

-महादेव नगर, सुन्दरनगर-175018 (हिमाचल प्रदेश)
मो. 09418053092, 08219390548

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

(पृष्ठ 2 का शेष)

इस पौत्र को उसी गायत्री-मंत्र की दीक्षा मिलती है। बालक जन्म से ही शांत और शालीन है, और इसी गुण को देखकर इसका नाम 'पूनम' रखा जाता है जो प्रतीक है, पूर्णता का, शीतलता का और पवित्रता का। इन आध्यात्मिक गुणों के साथ-साथ तीव्र मेधा जिस तरह विकसित हुई उसे आज की भाषा में 'सुपर इंटेलीजेंस' नाम दिया जा सकता है। दादा के अध्यात्ममयी गुण, माता-पिता के ईश्वरवादी विचार और परिवार में निरंतर होने वाले यज्ञ से और अल्पायु में योगेश्वरानंद जी जैसे महापुरुषों के संपर्क से इस नायक में जिस आध्यात्मिकता ने जन्म लिया उसी को आगे चलकर डी.ए.वी. का कायाकल्प करने का उत्तरदायित्व संभालना था।

परिवार में महात्मा आनंदस्वामी के चार पुत्र हुए। श्री पूनम सूरी के पिता श्री ओमप्रकाश के साथ इनका अत्यंत सामीप्य रहा जिसने अपने पुत्र की इस आध्यात्मिकता को और पुष्ट किया। अपने पिता के भाइयों–लेखक रणधीर, वक्ता श्रीयश, बहादुर और निर्भय युद्धवीर के विचार का भी प्रभाव इन पर दृष्टिगोचर होता है। दस वर्ष की आयु और हमारा यह नायक स्वामी योगेश्वरानंद से प्रश्न कर बैठता है कि, महाराज मुझे छुओ। शरीर पर हुए स्पर्श को देखकर कहने लगता है कि आपने तो मेरे हाथ को छुआ है, मुझे छुओ। और अगले दिन अपने पूरे परिवार की उपस्थिति में निर्भय होकर स्वामी योगेश्वरानंद जी के सामने बैठा यह बालक वही अनुभूति प्राप्त करता है जो योगियों को लम्बी-लम्बी साधना के बाद भी प्राप्त नहीं होती। उस समय स्वामी योगेश्वरानंद जी ने जिस तत्त्व को छुआ वह तत्त्व इस आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ गया।

25-26 वर्ष की आयु में, विवाह अभी हुआ ही था, स्वामी योगेश्वरानंद जी, जो पूनमजी को बेटे के समान समझते थे उनका आदेश हुआ कि पूजा-पाठ किया करो। ये नियति भी थी या वेद की भाषा में 'यर्मेव एष वृणुते तेनलम्य:'। वेद की इस वाणी के अनुसार एक महान चयन था।

डी.ए.वी. की बागडोर संभालते ही सबसे पहला कार्य संगठन में उस आस्तिकता और आध्यात्मिकता का निवेश करना था जिसके चलते आज डी.ए.वी. मुख्यालय ही नहीं देश-भर में फैली समस्त संस्थाओं में इस आस्तिकता का प्रसार हुआ है। यज्ञ करना अब औपचारिकता से ऊपर उठकर एक जीवन-दृष्टि बनने की ओर अग्रसर है। कुछ ही वर्ष पहले 'हंसराज दिवस' पर अपने सम्बोधन में प्रधानजी ने कहा था, 'मैं चाहता हूँ कि डी.ए.वी. का हर शिक्षक धर्म-शिक्षक हो' और इस महत्त्वाकांक्षी घोषणा को सार्थकता देने हेतु वही सारे प्रयास किये गये जिससे संगठन के कर्मचारियों और अध्यापक/अध्यापिकाओं में एक सच्ची आस्तिकता का जन्म हो, ऐसा हुआ भी। जब दो-दो दिन के शिविरों के पश्चात् इसमें भाग लेने वाले अध्यापक/अध्यापिकाओं ने जब इस आस्तिकता के प्रति अपना नवजागृत विश्वास जताया।

श्री पूनम सूरी आज भी बहुत सवेरे उठकर ध्यान और ईश्वर चिंतन में मग्न होते हैं और उसी अवस्था में अनेक ऐसे प्रश्नों का हल भी उन्हें मिलता है जो संस्था की समस्याओं, बाधाओं का निराकरण करने में मददगार साबित होता है।

प्रबंधक-समिति की बैठक में विचारणीय विषयों पर विचार करने के उपरांत सदन में बैठे सभासद अत्यंत उत्सुकता से अपने मार्गदर्शक का संदेश सुनने के लिए अधीर होते हैं और तब संगठन की उपलब्धियों और सामने आयी समस्याओं पर टिप्पणी करते हुए उनका हृदय सामने आ जाता है। इसके साथ-साथ आत्मा के उन्नयन और एक श्रेष्ठ मानव बनने के लिए वेद पर आधारित विचारों पर सरस घटनाओं और कथाओं के माध्यम से जब प्रधानजी अपना सम्बोधन देते हैं तो सभागार मानों एक सत्संग में बदल जाता है।

920 संस्थाओं के लिए नित्य-प्रति मुख्य अध्यापकों और प्राचार्यों की नियुक्ति होती रहती है। कार्य शुरू करने से पहले उन्हें लगभग दस दिन का एक प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें लगभग एक घंटा रोज़ यज्ञ करने के उपरांत डी.ए.वी. के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख किया जाता है। वे महसूस करते हैं अब सचमुच वे डी.ए.वी. का हिस्सा हैं।

इस आध्यात्मिकता के साथ-साथ संगठन को चलाने के लिए जिस मेधा-शक्ति, दूरदर्शिता और क्रियात्मकता की आवश्यकता है, वह भी डी.ए.वी. का अंग बन चुके हैं। परंपरा से हटकर नई-नई सोच उत्पन्न करना प्रधानजी का लक्ष्य रहा है। देश के सुदूर अंचलों में स्थित संस्थाओं में पहुंचकर उनके विकास की संभावनाओं का चिंतन करते हुए 'आउट ऑफ बॉक्स' सोचने का संदेश मिलता है। डी.ए.वी. को एक ब्रैण्ड बनाने की संकल्पना ने संस्था में एक अपूर्व सक्रियता को जन्म दिया है। समय के साथ चलने का संकल्प लेकर अपना मार्ग स्वयं तय करना–ये प्रधानजी की दूरदृष्टि है। 'ब्रैण्ड बिल्डिंग' की इस सोच ने संगठन में शारीरिक और आध्यात्मिक क्रान्ति ला दी है। तभी मन करता है कि आध्यात्मिक सक्रियता का यह युग डी.ए.वी. की दशा और दिशा बदलने का युग है।

श्री पूनम सूरी की इस आध्यामिक क्रियाशीलता के साथ-साथ उनके मन में निरंतर विनम्रता का जो भाव उत्पन्न है, उसके चलते संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति में प्रसन्नता, उत्साह और प्रेरणा देने की अपूर्व शक्ति उत्पन्न हुई है। राष्ट्रीय सम्मान 'पद्मश्री' प्राप्त करने के बाद पन्द्रह हज़ार लोगों की उपस्थिति में ऊँचे मंच से हाथ जोड़कर विनम्र शब्दों में जब इस सारी उपलब्धि का श्रेय डी.ए.वी. के प्रत्येक कर्मचारी को दिया जाता है तो 'इदन्नमम' के इस वैदिक दर्शन का जो व्यावहारिक रूप प्रकट होता है वह डी.ए.वी. की दशा और दिशा को बदलने का आधार बन जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि प्रधानजी के नेतृत्व में डी.ए.वी. का 'स्वर्ण युग' फिर से लौट आया है।

-निदेशक डी.ए.वी. पब्लिकेशन एवम् मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

जिसे खुद पर विश्वास होता है वो दूसरों का भी विश्वास जीत लेता है।

टंकारा समाचार सितम्बर 2018

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-09-2018

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.08.2018

मुद्रक व प्रकाशक—रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय